अमृत विचार

# लोक दर्पण

रविवार, 16 जून 2024 www.amritvichar.com

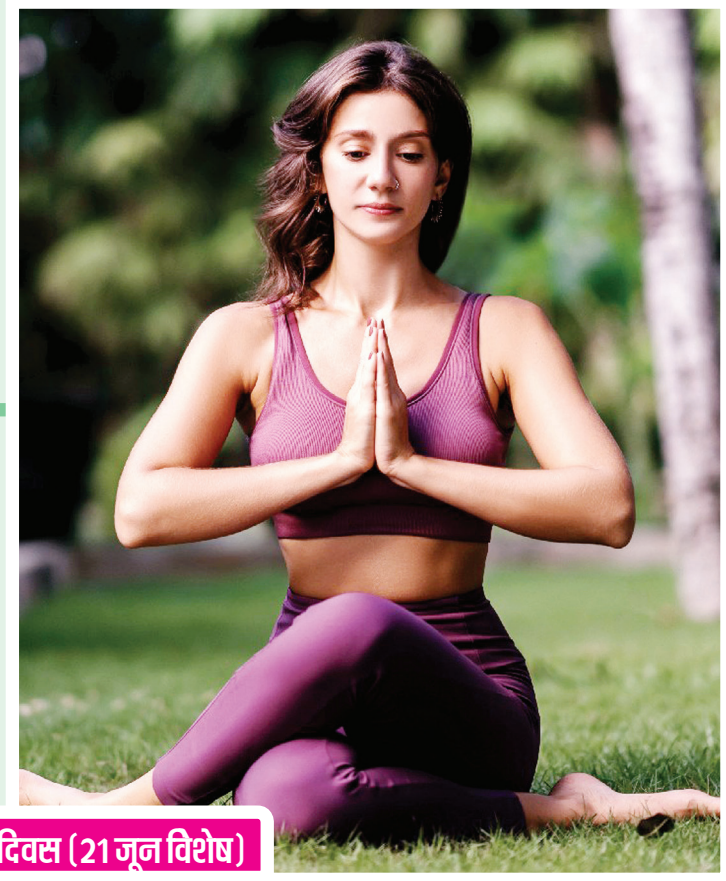

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून विशेष)

# योगः नियोग का सुयोग

योग का अर्थ है जुड़ना या जोड़ना। स्वास्थ्य की दृष्टि से योग का तात्पर्य है शरीर के विभिन्न तंत्रों जैसे हृदय, मन, मस्तिष्क, यकृत, किडनी (गुर्दे) और अन्य इंद्रियों-अंगों का परस्पर जुड़े रहना। आपस में समन्वित रखना। संयोजित रखना। योग शरीर, मन और अंतर्मन इन तीनों को परस्पर जोड़े रखता है। योग का आशय है-जुड़ना अपनी आत्मा से, परमात्मा से, मस्तिष्क का हृदय से, इंद्रियों का संपूर्ण शरीर से, व्यक्तियों का, राष्ट्रों का अखिल ब्रह्मांड से संयुक्त होने से। प्राचीन भारत में पृथ्वी के प्रत्यक्ष देवता सूर्य से जुड़ने की इसी प्रबल आकांक्षा ने सूर्य नमस्कार योगाभ्यास की अवधारणा को जन्म दिया। कहना न होगा की सूर्य नमस्कार के अभ्यास से साधक के अंग-प्रत्यंग सक्रिय रहते हैं और वह गर्दन, पीठ, घुटने, कूल्हे की हड्डियों की असमय बीमारियों से सदा सर्वदा के लिए मुक्त रहता है-बशर्ते वह यह व्यायाम किशोरावस्था से शुरू करें और निरंतर करता रहे।

डा. श्रीधर द्विवेदी
वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ, नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली

याद कीजिए महाभारत का वह ऐतिहासिक पल जब योगेश्वर कृष्ण ने विश्व को 'योग' से परिचित कराया और योग से निरोग होने की व्याख्या प्रस्तुत की गई : युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। / युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। 6.17।। अर्थात् उचित भोजन, समुचित व्यायाम, उचित कर्तव्यों का पालन तथा उचित समय पर सोने और जगने से हम दुख को प्राप्त नहीं होते। हमें रोग नहीं होते। यही योग है। इसीलिए कहा गया है-'योग रखे निरोग'।

गीताकार कृष्ण के अतिरिक्त महर्षि पतंजलि (5000 वर्ष पूर्व) ने योग की विधा को अष्टांग योग माध्यम से प्रतिपादित किया के अंतर्गत जिसके आठ सोपान हैं-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। एक सच्चे योगाभ्यासी के लिए आरंभिक चार सीढ़ियों जैसे यम, नियम, आसन और प्राणायाम का पालन करना जरूरी होता है। आजकल भ्रमवश लोग आसन को करने मात्र से ही योग करना समझ बैठते हैं। इसीलिए उन्हें योग का पूरा फायदा नहीं मिलता। महर्षि पतंजलि ने अपनी पुस्तक पतंजलि योग सूत्र में योग की एक और परिभाषा दी है- 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' (चित्त वृत्तियों का निरोध) - (2/51)। योग के समय हमें अपने चित्त को एकाग्र रखना बहुत जरूरी होता है।

यहां यह उल्लेख करना अत्यंत आवश्यक है कि योग की विधा सार्वकालिक है। योग सार्वजनीन, सार्वदैशिक, सार्वकालिक और शाश्वत है। दुर्भाग्य से अंग्रेजी में लोग इसे योगा लिखते-उच्चारण करते है,जो इसके वास्तविक अर्थ बोध को नष्ट कर देता है। 'योगा' शब्द से जोड़ने और जुड़ने का बोध नहीं होता है।

योग के सकारात्मक और लाभप्रद पक्ष से प्रभावित होकर सन् 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) ने 21 जून 2015 से प्रति वर्ष इसी दिन अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का सुनिश्चय किया। इसी संकल्प के अनुसार इस वर्ष 21 जून 2024 को पूरे विश्व भर में अत्यंत उत्साहपूर्वक योग दिवस मनाया जाएगा। 2024 में इस अंतर्राष्ट्रीय संकल्प का दसवीं वर्षगांठ होगी। इस वर्ष विचार विमर्श का मुख्य बिन्दु है योग द्वारा महिला सशक्तीकरण। इन पंक्तियों के लेखक का यह सौभाग्य है कि उसने प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को दिल्ली के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जामिया हमदर्द स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया। प्रसन्नता की बात यह है कि यह परंपरा अभी तक अक्षुण्ण है।

## इस वर्ष महिलाओं पर बल क्यों

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि महिलाएं हमारी जनसंख्या का आधा हिस्सा हैं। इस संदर्भ में हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि वैश्विक लिंग विषमता सूचकांक में भारत 146 देशों के अंदर 129 वें पायदान पर हैं। वैश्विक लिंग विषमता सूचकांक की गणना में उस राष्ट्र के महिलाओं की वित्तीय, शैक्षिक, स्वास्थ्य और राजनीतिक स्तर का आकलन किया जाता है। फिर लिंग विषमता का आकलन किया जाता है। इस तथ्य को ध्यान में रख कर यदि महिलाएं योग जैसी स्वास्थ्यप्रद विधा से अछूती रह गईं तो निश्चित ही हमारी आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा इस लाभ से वंचित रह जाएगा। यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि एक महिला के ऊपर अपने बच्चों के गर्भकाल, नवजात, शिशु और किशोरावस्था के लालन-पालन, संस्कार, चरित्र निर्माण और स्वास्थ्य की महती जिम्मेदारी होती है। अतः उसका योग से परिचित होना, योग करना बहुत आवश्यक होता है ताकि वह अपनी भावी पीढ़ी को भी योग से सुपरिचित कर सके। उसमें यह बीज डाल सके। अपने बच्चों को सुसंस्कारित कर सके। एक मां किस प्रकार अपने बच्चों को योग-सूर्य नमस्कार जैसे अच्छे संस्कार देती हैं उस पर देश के भविष्य का निर्माण होता है।

इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। शिवाजी महाराज जिनकी मां जीजाबाई ने उन्हें सूर्य नमस्कार के संस्कार दिए थे जिसके बल पर वह अपने कर्तव्य का सक्षमता पूर्वक पालन कर पाए। इन तर्कों के साक्ष्य के बल पर हम कह सकते हैं कि यदि हम अपनी महिलाओं को योग जैसी उत्तम स्वास्थ्य विधा से परिचित और व्यावहारिक करवा सके तो हमारे देश का भविष्य अधिक उत्तम हो सकेगा।

योग सब कर सकते हैं- योग हर व्यक्ति, हर उम्र, हर समुदाय और हर लिंग का व्यक्ति कर सकता है। इस विषय में यह निर्देश अत्यंत स्पष्ट हैः युवा वृद्धो अतिवृद्धो व्याधितो दुर्बलोति वा। अभ्यासाद् सिद्धिमाप्नोति सर्व योगेश्वद्रिंतः।। अर्थात् युवा, वृद्ध, अतिवृद्ध, रुग्ण, दुर्बल योगी, संन्यासी, गृहस्थ, राजनीतिज्ञ, चिकित्सक, फौजी, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आस्तिक, नास्तिक सभी योग कर सकते हैं और अभ्यास से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यह जरूर है कि उम्र, अवस्था, सेहत और देश काल की परिस्थितियों को देखते हुए योगासन का स्वरूप भिन्न हो सकता है। हमारे सामने ऐसे कई महानुभाव है,जो उम्र में अत्यंत श्रेष्ठ हैं जैसे 126 वर्ष के स्वामी शिवानंद, 90 वर्ष के ऊपर एयर मार्शल पीवी अइय्यर, 90 वर्ष के ऊपर सुप्रसिद्ध अस्थिरोग विशेषज्ञ प्रोफेसर तुली, शताधिक फौजा सिंह, 106 वर्ष की सुश्री रामबाई जिन लोगों ने योग-व्यायाम और सैर व अच्छी जीवन शैली के बल पर बहुत कुछ चमत्कार कर दिखाया है। यहां यह स्पष्ट करना है कि योग के लिए योगी/फकीर जैसी वेशभूषा या योग के विषय में जोर-जोर से बोलने की जरूरत नहीं होती है। अपितु उसे वास्तविक जीवन में व्यवहृत करने की आवश्यकता होती है- न वेश धारणं सिद्धेः, कारणं न च तत्कथा। कृयैव कारणं सिद्धाः, सत्य मे तन्न संशयः।

योग द्वारा कोई भी व्यक्ति आसानी से सुस्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है। अच्छा स्वास्थ्य कौन नहीं चाहता? कहते हैं न-तंदुरुस्ती हजार नियामत। अंग्रेजी में कहते है - हेल्थ इज वेल्थ। एक और उक्ति है-सेहत ही धन है, रोगी निर्धन है। इसकी पुष्टि संस्कृत के इस सुभाषित से मिलती है : 'धर्मार्थ काम मोक्षाणां शरीरं साधनं हितम' जिसका मतलब है धर्म अर्थात् कर्तव्य पालन, धन, संतति और मोक्ष इन सबकी प्राप्ति अच्छे स्वास्थ्य पर ही निर्भर होती है। अच्छा स्वास्थ्य योग से मिलता है- 'योग निरोग का सुयोग है'।

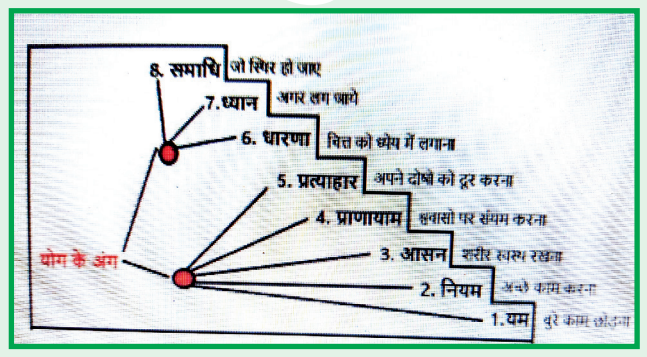


## योग से तनाव का निराकरण

योग के नियमित व्यवहार से हम तनाव, अवसाद और क्रोध पर नियंत्रण कर सकते हैं। ध्यान पूर्वक विचार करने पर योग का प्रथम सोपान यम हमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शुचिता, इंद्रिय निग्रह सिखाता है। आसन, प्राणायाम और ध्यान एकाग्रता सिखाते हैं। ये सब मिलकर व्यक्ति को शांत प्रकृति और प्रकृतिस्थ बनाते हैं। इस प्रकार हम तनाव जनित, अवसाद जन्य रोगों से सहज बच सकते हैं। योग की इसी सकारात्मक योगदान को ध्यान में रखकर वर्मांट विश्वविद्यालय में कक्षा के पूर्व योगाभ्यास का कार्यक्रम सुनिश्चित किया गया है,जो बहुत लाभदायी सिद्ध हुआ है।

योग के इसी लाभकारी पक्ष को ध्यान में रखकर तनाव जनित कई रोगों में जैसे हृदयाघात हृत्पेशी रोधगलन (मायोकार्डियल इनफार्कशन), ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, अवसाद, स्मृतिभ्रंश आदि रोगों में योग के व्यावहारिक प्रयोग जैसे प्राणायाम और शवासन करने की सलाह दी जाती है। सच पूछिए तो अनेक हृदय रोगों में उचित खानपान, उचित व्यायाम, अच्छी जीवनशैली पर बल दिया जाता है,जो योग के यम, नियम और आसन के अभिन्न अंग होते हैं। दिल्ली एम्स में किए गए एक शोध के अनुसार भ्रामरी प्राणायाम, अनुलोम-विलोम प्राणायाम और ध्यान/शवासन की विधियां अनेक मानसिक व्याधियों में उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

सारांश- योग अनुकूल जीवन जीने वाले लोग अर्थात् स्वास्थ्यप्रद भोजन करने वाले, उपयुक्त व्यायाम-योग, उचित कर्तव्य पालन करने वाले, समय पर सोने और समय पर जगने वाले लोगों से भरा हमारा देश निस्संदेह एक स्वस्थ संपन्न देश होगा। यह वह दिन होगा जब हम गर्व से कह सकेंगे-' हर घर योग, देश निरोग'।

## वे आदतें जो आपको बनाती युवा

योगमय जीवनशैली का पालन करने वाले लोग हमेशा युवा रहते हैं। योगमय जीवनशैली का मतलब है- तंबाकू और शराब से परहेज, शाकाहार, फलाहार, योग -व्यायाम, सामान्य वजन (शारीरिक गठन सूचकांक (बी एम आई)18- 25.5 के अंदर), सामान्य ब्लड प्रेशर, सामान्य रक्त शुगर, तनाव-द्वेष-क्रोध, चिंता से दूरी, ध्यान का नित्य अभ्यास करने वाले। ऐसे लोग हमेशा युवा बने रहते हैं। इन्हीं लोगों के लिए ही कहा है-मन निर्मल हो, हृदय विमल हो, कोष्ठ अमल हो, आयु प्रबल हो। योग जीवनशैली है।

## कौन होता है बूढ़ा

अष्टांग योग में बताए गए प्रथम सोपान के अंतर्गत यम-नियम का पालन न करने वाले लोग समय से पूर्व बूढ़े हों जाते हैं। ये हैं वे लोगः तंबाकू, धूम्रपान, ई-धूम्रपान, जंक भोजन करने वाले लोग, मांसाहारी, शराब सेवन करने वाले, व्यायाम -योग न करने वाले, मोटापे से पीड़ित (बी. एम.आई -25.5), डायबिटीज-हृदयाघात या कैंसर के रोगी, अत्यधिक चिंता, घृणा, द्वेष और क्रोधातुर लोग, अनिद्रा, चिरकारी कब्ज से पीड़ित लोग, अनुचित यौन संबंध के कारण एचआईवी से ग्रस्त लोग। ध्यान रहे ये सभी रोग मुख्य रूप से योग प्रतिकूल जीवनशैली के कारण उत्पन्न होते हैं। इसीलिए कहा जाता है-'करें योग, रहें निरोग'।

# बुजुर्ग बोझ नहीं, बहुमूल्य संपत्ति हैं हमारी

स्वयंसेवी संगठन हेल्प एज के सर्वे के अनुसार देश में करीब 60 प्रतिशत बुजुर्गों को दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। सर्वे में 73 प्रतिशत युवाओं ने माना कि बुजुर्गों के साथ बुरा बर्ताव होता है,लेकिन 42 प्रतिशत लोग यह कहकर समस्या से मुंह मोड़ते दिखे कि भारत ही नहीं सभी विकसित देशों और समाज में बुजुर्गों के साथ बेजा व्यवहार की दिक्कत है। यह सही है कि उपभोक्तावादी संस्कृति ने सामाजिक मूल्य बदल दिए हैं। नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आया है। लोगों में अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसके चलते बुजर्गों के लिए घर हो या बाहर समस्या बढ़ी है,लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि बुजुर्ग हमारी विरासत, समाज और देश की धरोहर हैं। उनकी बेहतर देखभाल और उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार सामाजिक मुद्दे के साथ प्रेम और भावना का परंपरागत रिश्ता है, इसलिए बुजुर्गों के साथ बढ़ते दुर्व्यवहार की समस्या का हल केवल सरकार के बनाए नियम-कानूनों से नहीं निकाला जा सकता है।

डॉ. क्षमा त्रिपाठी
प्रोफेसर, डी.जी.पी.जी कॉलेज, कानपुर

घटना जबलपुर रेलवे स्टेशन की है, ट्रेन में भीड़ थी और एक 76 वर्षीय वृद्ध अपनी छड़ी के साथ ट्रेन पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे,लेकिन किसी ने भी हाथ बढ़ाकर उन्हें सहारा नहीं दिया। नतीजन ट्रेन चल दी और वह प्लेटफार्म पर गिर गए। गनीमत रही कि ट्रेन के नीचे आने से बच गए। दूसरी घटना दिल्ली मेट्रो की है जिसमें युवाओं के एक समूह ने यह कहकर वृद्ध को बैठने की जगह देने से इंकार कर दिया कि आप अपनी सीनियर सिटीजन वाली सीट पर जाकर बैठिए। लखनऊ में जरा सी बात पर पोस्ट ऑफिस के सामने बैठने वाले बुजुर्ग टाइपिस्ट का टाइपराइटर एक पुलिस सब इंस्पेक्टर ने लात मारकर तोड़ दिया था। इस घटना का वीडियो खूब वायरल हुआ था। सार्वजनिक स्थलों पर बुजुर्गों के प्रति बढ़ती संवेदनहीनता के ऐसे मामले अब आम होते जा रहे हैं,लेकिन बुजुर्गों के तिरस्कार और अनादर की घटनाएं मीडिया में सुर्खियां बनने पर ही झकझोरती हैं तो इसके पीछे सबसे बड़ा कारण एकल परिवार की मान्यता स्थापित होने के साथ सामाजिक मूल्यों में आ रही गिरावट है जिसने वृद्धों के साथ बदसलूकी को एक बड़ी परिवारिक और सामाजिक समस्या में बदल दिया है। दरअसल आधुनिकता की अंधी दौड़ में भागती आज की युवा पीढ़ी अपने कर्तव्य और परंपरागत संस्कार भूलती जा रही है। इसके चलते ही वृद्धाश्रमों में हर कहीं बुजुर्गों से दुर्व्यवहार के सच को सिसकते हुए देखा जा सकता है। वहां बूढ़े माता-पिता की दास्तान सुनकर किसी भी व्यक्ति की आंखों में आंसू आ जाएंगे। ऐसे में बड़ा सवाल यही है कि आखिर वे कौन सी परिस्थितियां हैं जिनके कारण वे बच्चे जिनके लिए मां अपनी सभी इच्छाओं का त्याग कर देती है, उनकी खुशी के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर करने को तैयार रहती है। पिता उनके सपने पूरे करने को दिन-रात पसीना बहाता है,अंगुली पकड़कर चलना सिखाता है, लेकिन अपने पैरों पर खड़े होते ही बच्चे सब कुछ भूल जाते हैं। वृद्ध मां-बाप को जब बच्चों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है,तब बच्चों को माता-पिता बोझ जैसे लगने लगते हैं। यही वह बिंदु है, जहां से शुरू होता है, बुजुर्गों के साथ अपमानजनक व्यवहार का सिलसिला, जो घर की चाहरदीवारी से निकलकर अब बाहर सामुदायिक स्थलों पर भी तेजी से जगह बनाता नजर आ रहा है।

## बुजुर्गों से दुर्व्यवहार

आज हर शहर में ऐसी तमाम कहानियां हैं जिनमें बेटे-बहू ने वृद्ध माता-पिता को घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया। वृंदावन में तमाम वृद्धाएं मिल जाएंगी जिन्हें उनके पुत्र तीर्थ कराने के नाम पर लाए और छोड़कर चले गए। इन वृद्धाओं की जीवन अब कृष्ण भक्ति और मुक्ति में कट रहा है। हद तो तब हो गई जब दिल्ली में एक 86 वर्षीय वृद्ध के चार करोड़पति बेटों ने यह कहकर अपनी मां को घर से निकाल दिया कि तुम्हारे शरीर से बदबू आती है। आखिर ऐसा क्या और कैसे हुआ कि भारतीय संस्कृति में धरती पर भगवान का रूप कहे जाने वाले तमाम मां-बाप को अपने बच्चों के होते हुए दर-दर भटकना पड़ रहा है अथवा परिवार या समाज का आधार स्तंभ कहे जाने वाले वृद्धों को जगह-जगह हिकारत भरी नजरों का सामना करना पड़ रहा है। इन्हीं सवालों का जवाब तलाशने के साथ लोगों को बुजुर्गों के प्रति संवेदनहीन और जवाबदेह बनाने का प्रयास है। विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस जिसके लिए इस साल की थीम 'वृद्ध बचे हुए लोगों के लिए गरिमा,सुरक्षा और कल्याण को प्राथमिकता' है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य यही है कि बुजुर्गों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करके उन्हें जागरूक बनाया जाए और इसे रोकने के प्रयास करते हुए साधन और सहायता उपलब्ध कराई जाए। स्वयं सेवी संगठन हेल्प एज ने विगत वर्ष एक सर्वे किया था। इसमें पाया गया कि भारत में करीब 60 प्रतिशत बुजुर्गों को दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। रिपोर्ट के अनुसार 73 प्रतिशत युवाओं ने माना कि बुजुर्गों के साथ बुरा बर्ताव होता है,लेकिन 42 प्रतिशत लोग यह कहकर समस्या से मुंह मोड़ते दिखे कि भारत ही नहीं सभी विकसित देशों और समाज में बुजुर्गों के साथ बेजा व्यवहार की दिक्कत है। विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस वृद्ध व्यक्तियों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार, भेदभाव और उपेक्षा के बारे में लोगों की समझ बढ़ाने के लिए 15 जून को मनाया जाता है। यह दिवस बुजुर्गों के कल्याण उनकी भलाई की रक्षा करने और उनकी गरिमा बनाए रखने के महत्व पर जोर देता है। यह दिन व्यक्तियों और समुदायों को वृद्धों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रोत्साहित करता है। ऐसे में इस दिवस के मौके पर पश्चिमी समाज का अनुकरण करने वाली देश की युवा पीढ़ी के लिए विचारणीय प्रश्न है कि क्या उनके माता-पिता वृद्धाश्रम में रहेंगे या कि उनकी जिम्मेदारी सरकार की है। परिवार में अपनी अहमियत घटते देखकर और बात-बात में आप चुप रहिए या आपके मतलब की बात नहीं है, जैसी झिड़कियां मिलने से हताश एवं उपेक्षित जीवन का शिकार हो जाते हैं।



## रिपोर्ट और प्रावधान

वृद्धों की समस्याओं पर काम करने वाले चिकित्सकों के एक समूह ने करीब 50 फीसदी बुजुर्गों में इन्हीं कारणों से अवसाद (डिप्रेशन) के लक्षण पाए। भारत के संदर्भ में यह स्थिति और भी चिंताजनक हो जाती है, क्योंकि एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार देश की बुजुर्ग आबादी अगले सात वर्षों में 40 प्रतिशत तक बढ़ जाने का अनुमान है, यानी 2031 तक देश में 20 करोड़ से ज्यादा वरिष्ठ नागरिक हो जाएंगे। सरकार ने बुजुर्गों का गरिमा पूर्ण जीवन सुनिश्चित करने के लिए कानून में कई प्रावधान किए हैं। इनमें से एक 'माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण कानून 2007' है, जो विशेष रूप से संतानों द्वारा सताए जा रहे बुजुर्गों के लिए बनाया गया है। इसके जरिए बच्चों/रिश्तेदारों के लिए माता-पिता या वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल, उनके स्वास्थ्य, रहने-खाने जैसी बुनियादी जरूरतों की व्यवस्था करना अनिवार्य बनाया गया है। इस कानून की खास बात यह है कि अगर बुजुर्ग ने अपनी संपत्ति बच्चों या रिश्तेदार के नाम ट्रांसफर कर दी है और वे उसकी देखभाल नहीं कर रहे हैं तो संपत्ति का ट्रांसफर निरस्त हो सकता है। इसके अलावा एक प्रावधान यह भी है कि वे माता-पिता जो अपनी देखभाल करने में सक्षम नहीं हैं और उनके बच्चे या रिश्तेदार उनका ध्यान नहीं रख रहे हैं तो वे भरण-पोषण का दावा कर सकते हैं। उन्हें हर महीने 10 हजार रुपये तक गुजारा-भत्ता मिल सकता है,लेकिन कानूनी प्रावधानों के बावजूद सत्य यह भी है कि बहुत से बुजुर्ग लोक-लाज या परिवार की बदनामी के डर से अपने बच्चों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने से कतराते हैं। यह सही है कि उपभोक्तावादी संस्कृति ने सामाजिक मूल्य बदल दिए हैं। नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आया है। परिवार की परिभाषा पत्नी और बच्चों तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इस कारण भी बुजर्गों के लिए घर हो या बाहर समस्या बढ़ी है,लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि बुजुर्गों की बेहतर देखभाल सामाजिक मुद्दे के साथ प्रेम और भावना का रिश्ता है,इसलिए इसका हल केवल सरकार के बनाए नियम-कानूनों से नहीं निकाला जा सकता है। इसके लिए सबसे जरूरी है कि बच्चों को स्कूलों और घरों में बड़े-बुजुर्गों के प्रति सम्मानजनक संवेदनशील व्यवहार की शिक्षा दी जाए। युवा पीढ़ी को समझना होगा कि वृद्ध व्यक्ति समाज की बहुमूल्य संपत्ति हैं,कोई बोझ नहीं।

## शब्द ज्ञान

# जाना, बिखरना, फैलना, समाना

बिहारी ने कहा है- समै समै सुंदर सबै, रूप कुरुप न कोय। मन की रुचि जैति जितै, तित तैति रुचि होय। जो कुछ घट रहा है,वह काल है। मनुष्य के लिए उससे तादात्म्य बिठाना ही समय है। हिन्दी में अंतसूचक अव्यय है इति। गौरतलब है, इसमें भी गतिसूचक क्रिया 'इ' समाविष्ट है। इसलिए 'इति' में भी 'गति' विद्यमान है। देवनागरी का 'इ' वर्ण संस्कृत में क्रिया भी है जिसमें मूलतः गति का भाव है। जाना, बिखरना, फैलना, समाना, प्रविष्ट होना इसमें शामिल है।

इति में अंत और पूर्णता- 'इ' का का विशिष्ट रूप 'अय्' है और इसमें भी गति है। अय् में सम् उपसर्ग लगने से बनता है समय। 'सम' यानी साथ-साथ 'अय' यानी जाना। अर्थात् समय यानी साथ-साथ चलना, जाना। दरअसल हमारे आसपास का गतिमान परिवेश ही समय है। पल-पल बदलती सृष्टि या प्रकृति में जो कुछ भी दृश्य-अदृश्य हमारे इर्द-गिर्द है, वह सब काल के दायरे में है। 'इति' में समाप्त होने का जो भाव है दरअसल वह किसी बात के पूर्ण होने का बोध है। प्रकृति निरंतर विकसित होती है। यह विकसन क्या है? हमारे चारो ओर कुछ न कुछ घट रहा होता है। प्रतिपल गतिशील है। परीक्षा की 'इति' होना यानी परीक्षा समाप्त होना। इसे विद्याग्रहण के एक चरण का पूर्ण होना भी कह सकते हैं। 'चरण' में गति है। विचरण यानी चलना।

अजित वडनेरकर
वरिष्ठ लेखक

**गति के साथ इति-** बीत गया, चला गया, जा चुका जैसे वाक्य संपूर्णता और समाप्ति की सूचना देते हैं। यही 'गत' है। कुल मिलाकर 'गत-गति' के साथ 'इति' यानी जाने की क्रिया जुड़ी है। रीति, गति, प्रवृत्ति, वृत्ति सब में जो 'इति' विद्यमान है, वह गतिसूचक है। तो संस्कृत के अय्, इति तथा अन्य शब्दरूप (जिनमें 'इ' क्रिया समाहित है) जैसे अतति (चलना, दौड़ना), एतृ (जाने वाला, पास आने वाला) आदि, संस्कृत की निकटतम संबधी ईरान की अवेस्ता जबान में भी जाने के लिए 'अइती', 'येइंती' के साथ 'याइती' का प्रयोग मिलता है।

**फारस की खाड़ी-** ईरान के पर्सेपोलिस स्थित नक्शे-रोस्तम के शिलालेख में एक स्थान पर शिलालेखीय प्राचीन फारसी में फारस की खाड़ी के बारे में उल्लेख है- "दर्या त्य हका पारसा अइति" इसका अर्थ है "समुद्र जो पारस से आता है", इसमें समुद्र का पारस से रिश्ता स्थापित करने के लिए 'अइति' शब्द को पहचाना जा सकता है। यहां उल्लेखनीय है कि भारत-यूरोपीय भाषा कुटुंब की प्राचीन शाखाओं जैसे संस्कृत, अवेस्ता में क्रमशः एति, अइति जैसे शब्दों के साथ अन्य जबानों में भी इनसे मिलते-जुलते शब्दों की शिनाख्त होती है जैसे ग्रीक में इजोते, लैटिन में इओ, लुवियन में इति और हित्ती में इया है। गौरतलब है कि लुवियन और हित्ती दोनों प्राचीन अनातोलिया यानी आज के तुर्की क्षेत्र की भाषाएं थीं।

**अनेक भाषाओं से रिश्ता-** इसी तरह भारोपीय कुटुंब की अनेक युरोपीय भाषाओं में भी 'इति' के अलग-अलग रूप खोजे गए हैं जैसे लिथुआनी में आना यानी 'अतेइति' और 'अनेइना' जबकि जाने के लिए 'एइति' है। इसी तरह विद्वानों ने रूसी में इत्ती (इद-ती) और लात्वियाई में इतो समेत अन्य भाषाओं के शब्द भी तलाशे हैं और उनके आधार पर प्राचीन भाषाओं के पूर्वरूपों की अवधारणा की गई। इससे भाषाओं के विकासक्रम को समझने में मदद मिलती है। गौरतलब है कि ख्यात भाषाविद् जूलियस पकोर्नी के प्रोटो इंडो-यूरोपीय भाषाओं के डेटाबेस में गतिवाची क्रिया 'एई' है इसे संस्कृत के 'अय' से जोड़कर देखने की जरूरत है जिसमें जाने चलने का आशय है। उपर्युक्त सभी मिसालें इसी कड़ी का हिस्सा हैं।

**आवागमन और आयागमन-** 'इ' से ही संबद्ध है 'या' क्रिया जिसमें प्रवेश करना, पास आना, पहुंचना जैसे भाव हैं। 'यात्रा', 'यान,' 'यात्री', 'यातायात', 'यायावर' जैसे अनेक शब्द भी इसी कड़ी में जुड़ते हैं जिनमें गतिवाचक आशय हैं। जैसे अयन में जाने का भाव भी है और पथ, मार्ग का भी। उत्तरायण, दक्षिणायन को याद करें। इसी तरह यान में जहां गाड़ी, रथ, वाहन का बोध होता है वहीं इसमें मार्ग, पथ, राह का भी आशय है। 'य' का बदलाव 'ज' में होता है सो 'या' का ही एक रूप 'जा' हो जाता है। 'या' में निहित आना ही जाना में बदल जाता है। वैदिक गम और इंग्लिश कम में मूल तो गति ही है। एक में जाने, चलने की बात है, दूसरे में आने की। हिंदी में आवागमन के साथ आयागमन भी प्रचलित है। कन्नड़ और कोंकणी में आने के लिए येव्वे, मराठी प्राकृत में एइ, मराठी में येई, येणे और सिंहली के 'एनवा' में आने-जाने दोनों का भाव है।

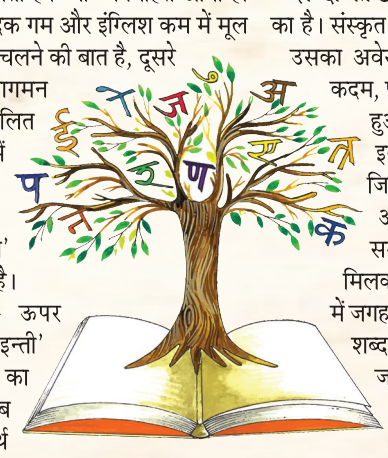

**जगह और जागाह-** ऊपर अवेस्ता की 'अइती', 'येइन्ती' के साथ 'याइती' क्रिया का उल्लेख आया है। गौरतलब है कि हिन्दी में स्थान के अर्थ में 'जगह' शब्द बहुत प्रचलित है। यह फारसी का शब्द है जिसके मूल में अवेस्ता का 'याइती' शब्द है जिसका 'या' ही फारसी तक पहुंचते-पहुंचते 'जा' में बदल गया। कोई भी मार्ग किसी न किसी गंतव्य को जाता है। हर राह की मंजिल होती है। तो जाने वाला 'जा' यानी क्रिया निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच कर 'स्थिति' में बदल गई। कहने का आशय यह कि याइती का 'या' ही फारसी का 'जा' है। संस्कृत के 'या' में तो जाना, चलना, आगे बढ़ना स्थिति बदलने का भाव है ही।

**शब्दों की छाप-** फारसी का गाह भी भारत-ईरानी परिवार का है। संस्कृत के गम् जिसमें गमन यानी जाने का भाव है, उसका अवेस्ताई समरूप है 'गाम' जिसका आशय है कदम, पग, डग, चलना आदि। इसका अगला विकास हुआ गाथु यानी स्थान, आसन, गद्दी या ठिकाना। इसके भी अगले चरण में बना फारसी का गाह जिसमें 'थ' से 'त' ध्वनि का लोप हो चुका था और जिसमें स्थान, स्थिति या पद जैसे आशय समा चुके थे। इस तरह 'जा' और 'गाह' ने मिलकर पहले फारसी में ठौर पाया और फिर हिन्दी में जगह बनाई। यह भी दिलचस्प रहा कि दो गतिवाची शब्द यानी 'जा' और 'गाम' मिल कर स्थानवाची जागाह / जगह बन गए। भाषाएं भी पग-पग, डग-डग चलते हुए अपनी छाप छोड़ती जाती हैं।

## कविता

### पिता पर पहेलियां

त्रिभुज के आधार सा और वृत्त का व्यास।
लंब सरीखा कोण में,घर-भर का परिमाप।

अरमान सभी के पूरे कर,
हर्षित-पुलकित होता।
जगता हो सबसे पहले,बाद सभी के सोता।

रुकता नहीं थकता नहीं,वो घोड़ा भी बन जाता।
मुसीबत सामने हो गर, पर्वत -सा है तन जाता।

अपने मन की किसे सुनाए,
सबके अपने-अपने किस्से।
सबकी मांगे पूरी करके,पीड़ा आती उसके हिस्से।

बेटा-बेटी खूब चहकते, अम्मा हसकर बतियाती।
उसकी मेहनत चमक रही, ज्यों दीपक की बाती।

बरगद की शीतल छांव सा, नेह के निश्छल गांव सा।
रिश्तों में अटल-अडिग, रहता जो अंगद पांव सा।

उंगली पकड़ चलना सीखा,
हाथ-पांव बने झूला।
जिसके कांधों पर चढ़कर, देखा करते हैं मेला।

अनुशासित जीवन रखे, प्रगति पथ का द्वार।
सकल मनोरथ मूल है, उसका प्यार-दुलार।

सभी का उत्तर - पिता।

नरेन्द्र सिंह नीहार
नई दिल्ली

### हेलो! हेलो! बेटे सुनते हो

हेलो! हेलो! बेटे सुनते हो?
आखिरत: मुंह खोल रहा हूं
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं।

माना हरदम व्यस्त बहुत ही रहते हो तुम,
जब भी पूछूं- मीटिंग में हूं, कहते हो।
मिले वक्त तो, पत्नी-बच्चों में खो जाते,
मम्मी-पापा मगर पराये-से हो जाते।
टोको तो कहते हो अक्सर-
मैं रस में विष घोल रहा हूं
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं।

रखे बैग में पैकेट पर पैकेट लाते हो
मां का चश्मा, मेरी दवा भूल आते हो।
खूब ठहाके कमरे से आते हैं तुम्हारे
हम बुड्ढे-बुढ़िया तन्हा तरसें बेचारे।
आखिर गलती कहां हो गई
अपना हृदय टटोल रहा हूं
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं।

लगता जैसे हम दोनों तुम पर भारी हैं,
मगर तुम्हारी बेटे हम जिम्मेदारी हैं।
हम दोनों के सब सुख-दुख तुम पर निर्भर हैं
लेकिन घर में रहकर भी लगता बेघर हैं।
अपने क्या सचमुच अपने हैं-
मैं अपनापन तोल रहा हूं
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं।



अशोक अंजुम
अलीगढ़

### वहीं पर लौट जाना है

दिये मुंडेरों पे रख रही हूं जमीं पे कलियां बिछा रही हूं
कभी तो आओगे लौटकर तुम
इसीलिए घर सजा रही हूं।
कभी तो उतरेगा चांद छत पर
कभी तो चमकेगी मेरी किस्मत
कभी तो जागेगी याद बनकर
तुम्हारे दिल में मेरी मुहब्बत
इसीलिए तो हथेलियों पर मैं
आज मेंहदी लगा रही हूं।
न मेरी गजलों में तितलियों के
हसीन रंगों की दास्तां है
न शाहजादों की है कहानी
न कोई जुगनू न कहकशां है
मैं बज्मे शेरो सुखन में सबको
तुम्हारा किस्सा सुना रही हूं।
सता रही है बहार सुन लो मैं हूं बहुत बेकरार सुन लो
अगर मुहब्बत है तुमको मुझसे
तो मेरे दिल की पुकार सुन लो
अकेले अब मैं न जी सकूंगी ये
आज तुमको बता रही हूं।
यह क्या ताल्लुक है चाहतों का कि मैं ही रोती रहूं हमेशा
यह कैसी रस्में हैं दिल की
आखिर कि गम अकेले सहूं हमेशा
कभी तो तुम भी मुझे ये लिक्खो
कि मैं तुम्हें याद आ रही हूं।



शबीना अदीब
कवयित्री, कानपुर

## कहानी

# संकल्प की शक्ति

मनोज कुमार का जन्म एक निर्धन कृषक परिवार में हुआ था। किंतु अपने परिश्रम और उन्नति करने की लगन के बल पर उन्होंने भारतीय जीवन बीमा निगम में अधिकारी पद पर नियुक्ति प्राप्त की थी। जीवन बीमा निगम में नौकरी करते हुए शहर में अपना सुंदर सा घर बना लिया था और मारुति 800 कार भी खरीद ली थी। उनकी इस तरक्की से उनके माता-पिता बहुत खुश थे। मनोज कुमार चाहते थे कि उनके माता-पिता उनके साथ शहर में ही रहें,मगर उनके माता-पिता को औपचारिकताओं और दिखावों से परिपूर्ण शहरी जीवन बिल्कुल पसंद नहीं था। अतः मनोज कुमार के बहुत आग्रह करने पर भी वे लोग एक सप्ताह से अधिक उनके साथ शहर में कभी नहीं रहे और जिद करके अपने गांव वापस लौट गये।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

मनोज कुमार ने अपने पुत्र सौरभ और पुत्री सुगंधा को शहर के सबसे प्रतिष्ठित विद्यालय में प्रवेश दिलाया ताकि उनके बच्चे अच्छे वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकें। इसके लिए उन्होंने विद्यालय की ऊंची फीस,परिवहन व्यय और विद्यालय द्वारा कराए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में होने वाले भारी व्यय की भी कभी परवाह नहीं की। उनकी पुत्री सुगंधा पढ़ने में कुछ ठीक-ठाक थी और हर वर्ष अगली कक्षा में पढ़ने हेतु प्रोन्नति पा जाती थी,मगर सौरभ का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था। पीटीएम में सौरभ के शिक्षक उसकी खूब शिकायतें बताते थे। मनोज कुमार अपने पुत्र को बहुत समझाते कि मेहनत से पढ़-लिख लोगे तो तुम्हारा भविष्य सुखमय होगा अन्यथा सारा जीवन अभावों और कठिनाइयों से जूझते हुए ही बिताना पड़ेगा। सौरभ उनकी बातों को एक कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता। वास्तव में सौरभ बहुत भावुक लड़का था। वह अक्सर कल्पना लोक में ही विचरण करता रहता था। वह स्वप्न तो बड़े-बड़े देखता, किंतु यथार्थ में धैर्य पूर्वक परिश्रम नहीं कर पाता। वह मनोज कुमार के कहने पर किताब खोलकर तो बैठता मगर पढ़ने के बजाय वह कल्पना करने लगता कि मैं यह कर लूंगा, वह कर लूंगा आदि आदि। मेज पर खोल कर रखी हुई किताब को कमरे की छत ही पढ़ा करती। कक्षा छः में जब वह अनुत्तीर्ण हो गया तो मनोज कुमार को बहुत दुख हुआ। उन्होंने सौरभ को घर में पढ़ाने के लिए एक ट्यूटर नियुक्त कर दिया। इसके परिणामस्वरूप सौरभ हर कक्षा में उत्तीर्ण तो हो जाता, मगर बहुत अच्छे अंक अर्जित न कर पाता। हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षाएं वह द्वितीय श्रेणी में ही उत्तीर्ण कर सका।

मनोज कुमार चाहते थे कि उनका बेटा इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करे,किंतु धन के बल पर भी वह किसी प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज में सौरभ को प्रवेश नहीं दिला सके। हारकर उन्होंने एक प्राइवेट शिक्षण संस्थान में सौरभ को बी.सी.ए.की पढ़ाई हेतु भर्ती करा दिया। सौरभ को भय था कि बी.सी.ए. की पढ़ाई में भी वह अधिक अंक अर्जित नहीं कर सकेगा। अतः बी.सी.ए. की पढ़ाई करते हुए सौरभ ने कम्प्यूटर हार्डवेयर का एक वर्षीय डिप्लोमा भी कर लिया। सौरभ का बी.सी.ए.का परीक्षा फल तो साधारण ही रहा, मगर हार्ड वेयर डिप्लोमा के आधार पर उसे एक छोटी सी नौकरी मिल गई। परिस्थितियों और संभावनाओं का आकलन कर मनोज कुमार ने बुझे मन से अपने पुत्र को यह नौकरी करने के लिए अपनी सहमति दे दी।

सौरभ को नौकरी करते हुए दो वर्ष व्यतीत हो गए,मगर उसके विवाह हेतु कहीं से कोई प्रस्ताव नहीं आया। एक रविवार को समाचार पत्र पढ़ते हुए उनकी दृष्टि एक वैवाहिक विज्ञापन पर पड़ी जिसमें उनकी ही जाति की एक सेवारत कम्प्यूटर इंजीनियर कन्या हेतु उपयुक्त सजातीय वर का प्रस्ताव मांगा गया था। मनोज कुमार ने सोचा कि यदि इस कन्या से सौरभ का विवाह हो जाए तो एक ही प्रकार की कंपनियों में सेवारत वर और कन्या दोनों सुखी रहेंगे। अतः काफी सोच-विचार के बाद मनोज कुमार ने दिए गए मोबाइल नंबर पर कन्या के पिता से संपर्क कर कहा- "मैंने समाचार पत्र में आपका वैवाहिक विज्ञापन पढ़ा है। हम इस संबंध हेतु तैयार हैं।"

कन्या के पिता शिव शंकर को बातचीत में जब यह ज्ञात हुआ कि प्रस्ताव करने वाले मनोज कुमार का घर भी इसी शहर में उनके घर से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तो उन्होंने कहा- "ठीक है भाई साहब, मैं आज शाम को चार बजे आपके घर पर आवश्यक वार्तालाप हेतु आऊंगा।" यह सुनकर मनोज कुमार बहुत प्रसन्न हुए और अपनी पत्नी को भी यह सूचना देते हुए आवश्यक तैयारी करने हेतु कहा। नियत समय पर कन्या के माता-पिता स्कूटर पर सवार होकर सौरभ को देखने आए। मनोज का सुंदर घर और कार देखकर वे दोनों बहुत प्रसन्न हुए। घर के अंदर जाकर उन्होंने जब मनोज का रहन-सहन और आतिथ्य देखा तो उनका मन गदगद हो गया। बातचीत के दौरान सौरभ को भी बुलाया गया। सौरभ ने आगंतुकों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और लज्जा वश वहां अधिक देर न रुक कर धीरे से खिसक लिया।

कन्या के पिता शिव शंकर राजकीय परिवहन निगम में लिपिक के पद पर कार्यरत थे। उनकी आर्थिक स्थिति से मनोज की आर्थिक स्थिति कहीं अधिक थी। सौरभ भी देखने में स्वस्थ और सुंदर था। अतः शिव शंकर और उनकी पत्नी इस रिश्ते को लेकर काफी प्रसन्न थे। वार्ता के क्रम में शिव शंकर ने पूछा - "सौरभ ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई किस कालेज से की है?"

मनोज ने बताया- "सौरभ ने बी.सी.ए. किया है और हार्ड वेयर का एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स किया है।" यह सुनकर शिव शंकर भड़क गए और क्रोधित होकर बोले- "जब आपका लड़का इंजीनियर नहीं है तो आपने हमें क्यों बुलाया? इंजीनियर लड़की का विवाह क्या हम डिप्लोमा होल्डर से कर देंगे? आदि अनेक प्रश्न कर वह मनोज कुमार को अपमानित करते रहे और विवश मनोज कुमार चुपचाप बैठे यह सब सहन करते रहे। शिव शंकर की पत्नी ने अपने पति को ऐसा अभद्र व्यवहार करने से रोका।

मनोज कुमार के आग्रह पर शिव शंकर ने चाय तो पी ली,मगर वह बिना कोई बात किए उनके घर से विदा हो गए। वह इतने नाराज थे कि उन्होंने जाते समय मनोज कुमार के अभिवादन का उत्तर भी नहीं दिया। उनके जाने के बाद सौरभ की मां ने अपने पति से कहा- "आप चुपचाप अपमान क्यों सहते रहे? हमने विवाह का प्रस्ताव ही तो दिया था, न कुछ झूठ बोला और न विवाह हेतु कोई दबाव डाला फिर यह क्यों इतना नाराज हो गए?" मनोज कुमार ने दुखी स्वर में कहा-"हमने अंगूर चाहे थे, मगर अंगूर तो नहीं मिले, बस खटास ही मिली। यही समझ लो।" सौरभ अपने माता-पिता का वार्तालाप दूसरे कमरे में बैठा सुन रहा था। उसने शिव शंकर द्वारा कही गई बातें भी सुनी थीं। सौरभ अपने पिता के अपमान से बहुत दुखी था और इसके लिए वह स्वयं को दोषी मान रहा था। उसने मन ही मन संकल्प लिया कि वह शिव शंकर की लड़की से अधिक योग्यता हासिल करके इस अपमान का बदला चुकाएगा। सौरभ ने कठोर परिश्रम करते हुए साइबर सिक्योरिटी में दक्षता प्राप्त की और नौकरी करते हुए एम.सी.ए.की उपाधि भी अर्जित की।

इस बीच उसने शिव शंकर की पुत्री सुधा से भी जान-पहचान बढ़ा ली और उसे अपना फेसबुक फ्रेंड बना लिया ताकि उसके विषय में जानकारी मिलती रहे। दस वर्ष के कठोर परिश्रम के बल पर जब वह एक एम.एन.सी.में टीम मैनेजर हो गया तो उसने सुधा को अपनी कंपनी में प्रोग्रामर के पद पर नियुक्त करा दिया। बैंगलोर में एक ही कंपनी में नौकरी करते हुए, एक ही शहर के मूल निवासी होने और स्वजातीय होने के कारण उनमें आत्मीयता काफी प्रगाढ़ हो गई। सौरभ की कार्य दक्षता और परिश्रम से प्रभावित होकर कंपनी के डायरेक्टर ने उसे केलिफोर्निया स्थित शाखा का प्रभारी अधिकारी नियुक्त कर दिया और वर्क बीजा बनवाकर उसे एक माह के अंदर केलिफोर्निया जाने का आदेश भेज दिया। सौरभ की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसकी प्रोन्नति से सुधा भी बहुत खुश थी। सौरभ ने सुधा से कहा -"सुधा मैं अमेरिका जाने से पहले एक छोटी सी पार्टी अपने मम्मी-पापा के साथ अपने करीबी लोगों को देना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम और तुम्हारा परिवार भी इस पार्टी में शामिल हो। यह सुनकर सुधा बहुत प्रसन्न हुई और उसने यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। पार्टी हेतु नियत तिथि पर अपने माता-पिता के साथ जब सुधा सौरभ के घर पहुंची तो सौरभ और मनोज ने उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। शिव शंकर को वहां पहुंचते ही अतीत का घटनाक्रम याद आ गया। उन्होंने बहुत संकोच के साथ सौरभ को इस तरक्की के लिए बधाई दी तो सौरभ ने लपककर उनके पैर छू लिए और हंस कर कहा -"अंकल जी मेरी इस तरक्की में आपका भी योगदान है।"

सौरभ का आशय मनोज और शिवशंकर दोनों ही समझ गए थे। मनोज का वक्ष यह सुनकर चौड़ा हो गया,मगर शिव शंकर अतीत को याद कर झेंप गए। यह देख मनोज कुमार ने आगे बढ़कर शिव शंकर को गले से लगा लिया। सौरभ और मनोज कुमार के आत्मीयता पूर्ण व्यवहार से शिव शंकर का मनोमालिन्य धुल गया और जाते समय उन्होंने सौरभ को गले लगाकर आशीर्वाद दिया।

## व्यंग्य

# इक्कीसवीं सदी का प्रेम

एक समय छोटी सी उमर में प्रेम रोग के रोगी नए-नए फिल्मी गीत गुनगुनाकर श्रेष्ठ आशिक सिद्ध करने का प्रयास करते थे। अपने काल्पनिक प्रेम की चर्चा मित्रों में किया करते थे। कभी किसी कवि की पंक्तियां दोहराकर स्वयं के दीवानेपन को प्रचारित करते थे कि कोई दीवाना कहता है कोई पागल समझता है, मगर धरती की बेचैनी को बस बादल समझता है। जिस कड़ी में प्रेम रोगी खुद को बादल और प्रेमिका को धरती समझकर प्रेम ग्रंथ के पन्नों पर अपना नाम लिखवाने के लिए उतावले रहा करते थे।

सुधाकर आशावादी
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

ऐसे दृश्य इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक काल में ही देखने को मिले। बीसवीं सदी में ऐसा था ही नहीं। उस सदी में एकतरफा प्रेम करने वाले आशिक तथाकथित प्रेमिका से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे। प्रणय निवेदन का श्रीगणेश रातों की नींद गंवाकर प्रेम पत्र लिखने से हुआ करता था,उसके उपरांत प्रेम पत्र को समर्पित करने की योजनाएं बना करती थी तथा माध्यम तलाशा जाता था। प्रेम निवेदन हेतु उपयुक्त अवसरों की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी,तब कहीं जाकर कोई विरला ही अपनी बात आगे बढ़ा पाता था। बहरहाल जब से इक्कीसवीं सदी में प्रवेश किया है। प्रेम अभिव्यक्ति भी उच्च तकनीक में परिवर्तित हो चुकी हैं। अब प्रेम पत्र लिखने का झंझट ही समाप्त हो गया। प्रतीकों में लिखी जाने वाली शायरी गायब हो गई। तू मेरा चांद मैं तेरी चांदनी जैसे गीत गायब हो गए। याद आ रही है,तेरी याद आ रही है,जैसे विरह गीत लापता हो गए। अब सूचना क्रांति का युग है। मैसेंजर और व्हाट्सएप पर चौबीस घंटे बात होती है। आई लाइक यू से प्रेम पथ का सफर शुरू होकर आई लाइक यू टू की पटरी पर रेंगता रहता है। वर्तमान में सभी व्यावहारिक हो चुके हैं। कोई भी स्थाई तौर पर एक दूजे के लिए बने नहीं रहना चाहता। लिव इन संस्कृति में कब कौन किसी का लिव इन पार्टनर बन जाए और कौन कब किसका एक्स बन जाए ,कहा नहीं जा सकता। इस प्रकार से प्रेम प्रस्ताव और प्रस्ताव पर स्वीकृति को कोई भी पुख्ता नहीं करना चाहता। वह प्रेम को तू नहीं और सही और नहीं और सही के खेल तक ही स्वयं को सीमित रहना चाहता है। वह चाहता है कि प्रेम केवल टाइम पास रहे,प्रोबेशन पीरियड से आगे न बढ़ सके।

गृहस्थी का दायित्व निभाने का हौसला किसी में बचा नहीं रह गया है। सहनशीलता का गुण लुप्त है। इसीलिए आत्मीय प्रेम लुप्त है। पहले प्रेम समर्पण का पर्याय हुआ करता था। अब समर्पण की जगह महंगे गिफ्ट वसूलने का पर्याय बन गया है। अब थ्योरी में नहीं,बल्कि प्रेक्टिकल में विश्वास अधिक है। सो एकपक्षीय अविश्वास प्रस्ताव और स्वीकृति के अधिकार दोनों के पास हैं। समायोजन जैसे मूल्य अपने अर्थ खो चुके हैं। विरह जनित पुराने गाने किसी को नहीं सुहाते। अब कोई नहीं गाता कि दोस्त दोस्त न रहा, प्यार प्यार न रहा, जिंदगी हमें तेरा एतबार न रहा। अब प्रेम पर एतबार हो या न हो, किंतु जिंदगी पर एतबार अवश्य रहता है। अब कोई यह नहीं कहता कि आती क्या खंडाला, अब यही कहते हैं, आती है तो आ, नहीं तो कहीं भी जा। सो प्रेम अपने आधुनिक स्वरूप में बिना कल की चिंता किए यही गुनगुना रहा है कि जिंदगी एक सफर है सुहाना,यहां कल क्या हो किसने जाना।

## लघुकथा

# बुढ़ापे का प्यार

''अजी सुनती हो! आज तुमने फिर से हलवे में कम चीनी डाली है,अच्छा खासा हलवा बेस्वाद होकर रह गया है।'' अपनी आदत से मजबूर 70 वर्षीय प्रेम जी ने आज फिर अपनी 65 वर्षीय पत्नी रेखा को उलाहना देते हुए अपना व्यंग्य बाण छोड़ा। प्रेम जी एक अवकाश प्राप्त सरकारी अफसर थे और उनकी पत्नी रेखा भी अवकाश प्राप्त सरकारी शिक्षिका थी। यद्यपि दोनों को संतान का सुख नहीं मिल पाया था,लेकिन दोनों एक दूसरे के साथ खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहे थे,लेकिन आज न जाने दोनों को किसी की नजर लग गई थी।

रेखा उस समय रसोई में व्यस्त थी इसलिए वहीं से झुंझलाती हुई बोली,''आपको तो मुझे टोकने की आदत सी हो गई है,अरे! मैं कुछ नहीं भूली हूं,मैंने हलवे में अपने हिसाब से जितनी चीनी डालनी चाहिए,उतनी ही डाली है ताकि आपको शुगर की बीमारी न हो।'' "तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं?" प्रेम जी ने जबाव देते हुए कहा। इतना सुनते ही रेखा का पारा सातवें आसमान को छूने लगा। रसोई का काम अधूरा छोड़कर वह दनदनाती हुई प्रेम जी के पास पहुंची और दोनों हाथ कमर पर रखकर बोली, "आपके लिए खाना बनाते-बनाते मैं बूढ़ी हो गई हूं। कभी तो अपनी और मेरी उम्र का लिहाज कर लिया करो।" प्रेम जी तो मानो पहले से तैयार बैठे थे, "मैं तो उस दिन को कोस रहा हूं जब मैं तुम्हें ब्याह कर अपने घर लाया था। मुझे पता होता कि तुम इतनी नकचढ़ी हो तो मैं कभी भी यह गलती नहीं करता,लगता है कि ऐसा बेस्वाद खाना खिलाकर अब तुम मेरी जान लेकर ही छोड़ोगी।"

विनोद कुमार डबराल
बरेली

पति के मुंह से ऐसी बातें सुनकर रेखा रुआंसी होते हुए बोली,''देखो जी! आप यह जान वान लेने की बात मत किया करो, भगवान करे, आपसे पहले मुझे ही मौत आ जाए।" "अरे! तुम कहीं नहीं जाने वाली! यह बात लिखकर रख लो कि तुमसे पहले मैं ही परलोक जाऊंगा।" प्रेम जी पत्नी को लगभग चैलेंज करते हुए बोले। ''हे भगवान! ये आज इन्हें क्या हो गया है?" रेखा सुबकते हुए बोली, "देखिए मैं कहे देती हूं,आप ऐसी बातें मत किया करें, कभी सोचा है कि आपके जाने के बाद मेरा क्या होगा, मैं भला अकेली कैसे जियूंगी? इसलिए हे भगवान! इनसे पहले आप मुझे अपने पास बुला लो।"

"बड़ी आई भगवान की चमची! अरे! यदि तुम पहले चली गई तो मेरा क्या होगा? मेरी देखभाल कौन करेगा? मुझे रोजाना स्वादिष्ट खाना बनाकर कौन देगा?" कहते कहते प्रेम जी का गला भर आया। कमरे का माहौल काफी गमगीन हो चुका था। दोनों बूढ़े पति-पत्नी एक दूसरे को कातर और सजल नेत्रों से देख रहे थे।

सहसा प्रेम जी ने रेखा का हाथ पकड़ा और भर्राए स्वर में बोले, "मैं रोजाना रात को सोने से पहले भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि हे प्रभु! हम दोनों को आप एकसाथ ही अपने पास बुलाना,क्योंकि हम एक दूसरे के बिना एक पल भी नहीं रह सकते।'' अपने पति के मुंह से यह सुनते ही रेखा भावावेश में प्रेम जी के गले लगकर रोने लगी। कमरे का गमगीन माहौल अब बदल चुका था और उसकी जगह "बुढ़ापे के प्यार" ने अपनी बाहें फैलाकर दोनों बूढ़े पति-पत्नी को जकड़ लिया था।

## समीक्षा

# 'वनवासी राघवेंद्र' के श्रीराम

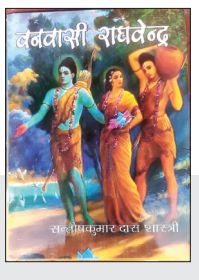

पुस्तक - वनवासी राघवेंद्र
लेखक- संतोष कुमार तिवारी
प्रकाशक - नमन प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य- रु0 350/- (पेपर बैक)
पृष्ठ - 126
समीक्षक - गोविंद दास

श्रीरामकथा के विभिन्न प्रसंगों पर आधुनिक दृष्टि-संपृक्त पुस्तक वनवासी राघवेंद्र इन दिनों चर्चा में है। इसके लेखक अयोध्या के निवासी धर्म और आध्यात्म स्तंभ के स्तंभकार व रामकथा के अध्येता संतोष कुमार तिवारी हैं। यह लेखक की तीसरी कृत है। पुस्तक के आरंभ में गुरु वंदना और सरस्वती स्मरण के पश्चात् श्रीराम के अनुपम चरित्र,उनके औदार्य व विचार तथा उनकी सामाजिक उपादेयता का सम्यक् अनुशीलन पाठक को आद्यांत बांधे रखता है। 126 पृष्ठ में 30 लेख,एक भेंटवार्ता, तीन रामकथा पर आधारित पुस्तकों की समीक्षा और पांच रामकथा केंद्रित कविताओं से समृद्ध इस पुस्तक में सूर्य और सूर्यपुत्र वैवस्वत मनु की उपासना, राम सरिस कोउ नाहीं,आज राम कै जनमवां है रंग बरसे, भये प्रगट कृपाला, जेहि मंडप दुलहिनि वैदेही,सिया संग यै भांवरि घूमिहैं कइके भंग पिनाका ,सीताष्टमी,विहरत गलबाही दिये सिय रघुनंदन भोर, महामोह उपजा उर तोरे, पक्षी भ्राता जटायु और संपाती,राम वन गये तो बन गये आदि एकाधिक लेख नवीन कलेवर, विषयवस्तु तथा कथा- मर्म के अभिनव विश्लेषणात्मक अध्ययन की पुण्यमयी प्रस्तुति है। सभी लेखों पर मूलतः गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के कथा-प्रवाह का प्रतिबिंब साफ परिलक्षित होता है। भाषा का प्रवाह सहज-स्वाभाविक है। लेखक की यही निपुणता है कि उसने कठिन सामासिक शब्दावली का प्रयोग सामान्य से विशिष्ट कथा बिंदुओं में कहीं भी नहीं किया है। इसके अतिरिक्त पुस्तक के अनुशीलन में लेखक ने देशकाल-परिस्थिति की खूब थाह लगाई है। तभी तो वह रामकथा नायक श्रीराम के अलौकिक पक्ष पर जोर देने के बजाय,उन्हें जननायक के रूप में देखता है। उनके राम प्रतिदिवस कोई न कोई दुसह-दुष्कर परीक्षा देकर कुंदन के समान और निखरकर सामने आते हैं। वे साध्य और साधन दोनों हैं। समाज में समस्त प्रकार की अराजकता वस्तुतः अधैर्य और अविवेकी मन की उपज हैं ,ऐसे श्रीराम के चरित्र को अपने जीवन में बिना आत्मसात किए व राष्ट्र का उत्कर्ष संभव नहीं है।

# दुनिया के ऊंचे मंदिरों में से एक मुक्तिनाथ

मुक्तिनाथ मंदिर दुनिया के सबसे ऊंचे मंदिरों में से एक है (3,710 मीटर)। इसकी ऊंचाई केदारनाथ और तुंगनाथ से भी अधिक है। अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक मुक्तिनाथ मंदिर विशुद्ध बौद्ध देवता अवलोकितेश्वर का मंदिर माना जाता था। अवलोकितेश्वर महायान के प्रमुख बोधिसत्व हैं। महायान मानता हैं कि ब्रह्मांड के सभी प्राणियों से प्रेम करना और सभी के निर्वाण के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। इस कार्य हेतु महायान में प्रेरणा और सहायता के लिए बोधिसत्वों को माना जाता है।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

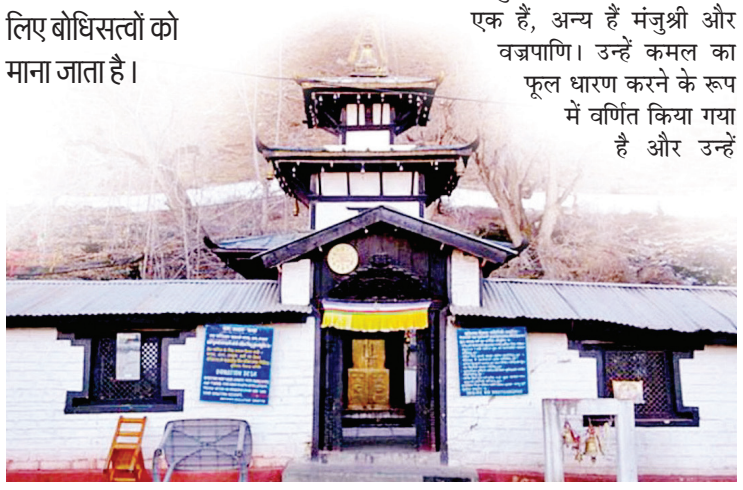

लगता है यह हिंदू धर्म की मूर्ति पूजा का प्रभाव रहा होगा। उल्लेखनीय है बुद्ध ने अपने सभी अवतारों के दौरान स्वयं को बोधिसत्व कहा था। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही उन्होंने स्वयं को बुद्ध घोषित किया। बोधिसत्व का अर्थ है "एक व्यक्ति जो बुद्ध बनने का इरादा रखता है। बोधिसत्व वे हैं,जो पारमिताओं का पूर्ण पालन करते हैं। पहले बोधिसत्व बुद्ध शाक्यमुनि (गौतम सिद्धार्थ) थे। महायान शाखा में हजारों बोधिसत्वों को पूजा जाता है और उनका इस संप्रदाय में देवताओं जैसा स्थान है। अवलोकितेश्वर तीन सुरक्षात्मक देवताओं में से एक हैं, अन्य हैं मंजुश्री और वज्रपाणि। उन्हें कमल का फूल धारण करने के रूप में वर्णित किया गया है और उन्हें पद्मपाणि के नाम से भी जाना जाता है। उनकी पेंटिंग अजंता की गुफाओं में भी पाई जाती है और ये सभी बोधिसत्वों में सबसे अधिक स्वीकृत हैं। ये करुणा के बोधिसत्व, दुनिया की पुकार को सुनने वाले हैं। कहा जाता है कि वे परम पावन दलाई लामा के रूप में अवतार लेते हैं। बौद्धों के लिए, मुक्तिनाथ एक ऐसा स्थान है, जहां महान ऋषि गुरु रिनपोछे (पद्मसंभव) जो बौद्ध धर्म को तिब्बत में लेकर आए थे,ध्यान करने आए थे। गौतम बुद्ध हिंदू धर्म में विष्णु के अवतार माने जाते हैं। इसी कारण धीरे-धीरे मुक्तिनाथ मंदिर विष्णु के मंदिर के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया। हिंदुस्तान में भी बोध गया जैसे स्थानों पर भी पहले हिंदू पूजा होती थी। वहां हिंदू पुजारी होते थे।

हिंदू धर्म में मुक्तिनाथ 108 दिव्य देशम में से एक है और भारत के बाहर स्थित एकमात्र दिव्य देशम है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने एक ऋषि द्वारा शापित होने के बाद मुक्तिनाथ में शरण ली थी। ऐसा माना जाता है कि विष्णु ने मुक्तिनाथ में निवास करने के लिए एक शालिग्राम (एक पवित्र काला पत्थर) का रूप धारण किया था और भक्त उन्हें इसी रूप में पूजते हैं। इस मंदिर में पानी की धार बहती है। बैलों के आकार की 108 धारियां हैं। बैलों के मुंह से बहने वाला पानी बेहद ठंडा होता है। मुक्ति धारा के नाम से जानी जाने वाली ये टोटियां प्राचीन शास्त्रों में वर्णित पवित्र जल स्रोतों का प्रतिनिधित्व करती हैं। मुक्तिनाथ मंदिर में ऑक्सीजन का स्तर समुद्र तल के ऑक्सीजन स्तर का लगभग 70 से 80 प्रतिशत है। हवा में ऑक्सीजन के उस स्तर पर आपके रक्त में ऑक्सीजन का स्तर लगभग 80 से 90 प्रतिशत होगा। इसलिए सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे के बीच दर्शन करने की सलाह दी जाती है।

करीब एक हफ्ते की नेपाल यात्रा समाप्ति पर आ गई थी। हमने पोखरा की लेक (फेवा) के किनारे टहलने का आनंद लिया,क्योंकि यह होटल लेक किनारे ही थी। मुक्तिनाथ/मतंग घाटी की कठिन यात्रा है। इस यात्रा ने नेपाल के बारे में मेरी तमाम धारणाओं को तोड़ा।

एक तो कहीं भी, किसी भी ऑफिस में काम के लिए पैसे की डिमांड नहीं हुई। अधिकारियों का व्यवहार बहुत सराहनीय रहा। लोगों ने बताया कि भ्रष्टाचार है पर हमें उसकी बानगी नहीं मिली। इसके साथ ही साथ यह भी पता चला कि यहां चोरी बेईमानी नहीं है। कहीं भी सामान छूट जाए, आपको मिल जाएगा। मुझे आस्ट्रेलिया में अपने छाते की याद आई,जो दूसरे दिन मिला था। लोग मददगार और अनुशासित दिखे। तमाम जगहों पर लड़कियों/स्त्रियों को दुकान / कैफे संभालते हुए देखा जिनमें खूब सेवा भाव मिला।

भारतीय दृष्टिकोण से नेपाल में महंगे होटलों को छोड़ दें तो तमाम चीजे सस्ती लगी। भारत और नेपाल कई दृष्टिकोण से प्राकृतिक साथी हैं। दोनों देशों के लोगों के आपसी प्रगाढ़ रिश्ते हैं बस सरकारों के स्तर पर उन्हें संजोने की जरूरत है।

# गर्मियों में वरदान है बेल

भारत में फलों में बेल बहुत पवित्र माना गया है। मान्यता है कि इसकी जड़ में महादेव का वास है ,इसके तीन पत्तों में जो एक साथ होते हैं उन्हें त्रिदेव का स्वरूप मानते हैं। आचार्य सुश्रुत ने ऋग्वेद श्रीसूक्त के द्वारा बेल की आहुति का विधान किया है जिससे अलक्ष्मी का नाश एवं आयु वृद्धि होती है। बेल को आयुर्वेद में बिल्व कहा जाता है। इसके जड़, छाल, कच्चे फल, पके फल, पत्ते का औषधीय प्रयोग किया जाता है।

भीषण गर्मी से थकने पर इसके फल का सेवन करने से कार्बोहाइड्रेट, पानी और मिनरल्स की कमी पूरी होने के साथ एनर्जी, हाइड्रेशन भी मिलता है। लू से बचने का यह एक बहुत ही कारगर फल है। इसके फलों में टैनिन पाया जाता है जिसने यह बैक्टीरियल डिसेंन्ट्री में लाभकारी होता है। बरेली के एसआरएम राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज व चिकित्सालय की द्रव्यगुण विशेषज्ञ डॉ. रिंकी जाटव का कहना है कि स्त्रियों में हो रहे श्वेत प्रदर या गर्भाशय में सूजन होने पर इससे लाभ होता है। इसका सेवन से स्तन कैंसर से भी बचाव होता है,जो महिलाएं शिशु को दूध पिलाती हैं,उन्हें बेल के शर्बत में सोंठ का चूर्ण और गुड़ मिलाकर लेने से दूध अधिक होता है और उसकी पोषकता बढ़ती है। हृदय के रोगियों के लिए इसकी जड़ का इस्तेमाल करने से हृदय को शक्ति मिलती है। इसके फल से कोलेस्ट्रॉल कम होता है और पोटेशियम होने से उच्च रक्तचाव (बीपी) कम होता है। यह रक्तधमनियों में लचीलापन बढ़ाता है।

त्वचा रोगों में इसके शर्बत के सेवन के साथ इसके पत्तों को पीसकर लगाना चाहिए। चेहरे पर हो रहे मुहासों को दूर करता है और ब्लड को साफ करता है। ज्वर में इसकी जड़ का काढ़ा देते हैं और पत्तों का प्रयोग करते हैं। इसके फल में विटामिन सी होने से यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और संक्रमण दूर करता है।

रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज व चिकित्सालय की स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कंचन भारद्वाज का कहना है कि बेल का जूस गर्मियों में रोज पीना चाहिए,खासतौर पर महिलाओं को। यह पीलिया में लाभकारी है,लिवर की कार्य प्रणाली दुरुस्त रखता है और एसिडिटी में भी लाभकारी है।

शब्या सिंह तोमर, बरेली

### बेल जूस के फायदे

- बेल के जूस में मौजूद फाइबर ब्लड शुगर कंट्रोल करता है।
- वजन घटाने में मददगार है।
- इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है।
- शरीर को हाइड्रेट रखने में सहायक है।
- पाचन को मजबूत करता है।
- मुंह के छालों को राहत पहुंचाता है।
- बवासीर की समस्या में इसको खाली पेट खाना लाभदायक है।
- इसमें एंटीऑक्सिडेंट गुण पाए जाते हैं,जो दिल की बीमारी होने से बचाते है।
- इसमें विटामिन-सी पाया जाता है।
- इसका जूस अतिसार को कम करता है।

## खाना खजाना

# अंगूरी गुलाब जामुन

बच्चे हो या बड़े सबको गुलाब जामुन बहुत पसंद हैं। इसमें अंगूरी गुलाब जामुन का एक अलग स्वाद है। आइए आज आपको इसकी बनाने की विधि बताते हैं।

**सामग्री**

- 300 ग्राम खोया
- 100 ग्राम पनीर
- 70 ग्राम मैदा
- 1/2 कप दूध
- 800 ग्राम चीनी
- 750 ग्राम पानी
- इलायची
- फ्राई के लिए घी

**बनाने की विधि**

एक भगौने में चीनी और पानी गरम करके रखें और धीमी आंच पर चीनी पिघलने तक गर्म करें। ज्यादा पकाना नहीं है। चीनी गलने पर गैस बंद कर दें और 4-5 दर्दरी इलायची मिला दें। अब ढककर रख दें। आपकी चाशनी तैयार। एक परात में पनीर और मावा को कद्दूकस करें। दोनों को हाथ से मसलते हुए अच्छे से मिलाएं। साथ में थोड़ा-थोड़ा मैदा मिलाते रहे। सूखा लगे तो थोड़ा छोटी चम्मच से दूध मिलाएं और हाथ से मलते हुए चिकना आटा लगाएं। इसमें 15-20 मिनट लगते हैं। कढ़ाई में घी गरम करने के लिए गैस पर रखें। आंच धीमी रखें। आटे की छोटी-छोटी गोली जितनी आकार के भाग करें और गोली बनाए। सभी गोली बना लें और जब घी हल्का गरम हो जाए तो एक-एक करके सभी गोली घी में डाल दें। 3-4 मिनट तक बिल्कुल न हिलाएं। सभी गोली अपने आप घी के ऊपर आ जाएंगे। धीमी आंच पर ही हल्के हाथ से चम्मच चलाते हुए गुलाब जामुन को तल लें। सभी गोली घी से निकाल लें और एक पेपर पर रखें, जिस से एक्स्ट्रा घी निकल जाए। कुछ देर बाद सभी गोली चाशनी में डाल दें। सभी गुलाब जामुन चाशनी में अच्छे से डुबने चाहिए। एक घंटे बाद गुलाब जामुन अच्छे से सॉफ्ट हो जाएंगे। अब आपके नरम मुलायम स्वादिष्ट अंगूरी गुलाब जामुन तैयार हैं।

# क्या सभी बच्चों में एक समान होता है ऑटिज्म

डॉ. पूनम यादव
मानसिक रोग विशेषज्ञ, वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज शाजहांपुर

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हर साल 18 जून को ऑटिस्टिक प्राइड डे मनाया जाता है। यह दिन ऑटिस्टिक लोगों को समाज में स्वीकार किए जाने और सम्मानित महसूस करने का अवसर प्रदान करता है। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) से पीड़ित लोगों को अक्सर मानवाधिकारों के उल्लंघन, भेदभाव और कलंक का सामना करना पड़ता है। ऐसे में ऑटिस्टिक प्राइड दिवस एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार लगभग हर 100 में से 1 बच्चे को ऑटिज्म है।

ऑटिस्टिक प्राइड डे के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि ऑटिस्टिक लोग रोगी नहीं होते बस नार्मल लोगों से थोड़ा अलग होते हैं। इस दिन के द्वारा यह स्वीकारा जाता है की ऑटिस्टिक लोग स्पेशल हैं। उनके पास अपनी अलग खूबी है। इस दिन ऑटिस्टिक लोग सामने आते हैं और अपनी कहानी बयां करते हैं।

### ऑटिस्टिक प्राइड डे का इतिहास

ऑटिस्टिक प्राइड डे पहली बार 2005 में एस्पीज फॉर फ्रीडम (एएफएफ) द्वारा मनाया गया था। एएफएफ, एक ऐसा समुदाय है,जो ऑटिज्म के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए काम करता है। तब से हर साल विश्व स्तर पर इस दिन को मान्यता दी जाती है। 2004 में ऑटिस्टिक लोगों के साथ दुर्व्यवहार की प्रतिक्रिया के रूप में एस्पिज फॉर फ्रीडम बनाया गया था। यह उसी के बारे में ज्ञान फैलाने पर केंद्रित है। ऑटिस्टिक प्राइड फ्लैग में इंद्रधनुषी रंगों से भरे अनंतता का प्रतीक है। इंद्रधनुष गर्व का प्रतिनिधित्व करता है और अनंत विविधता और अनंत संभावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

### ऑटिस्टिक प्राइड डे मनाने का उद्देश्य

ऑटिस्टिक प्राइड डे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) के बारे में जागरूकता बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह दिन केवल जागरूकता बढ़ाने और भेदभाव को कम करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एएसडी से पीड़ित बच्चों और वयस्कों की असीमित क्षमता और संभावनाओं को भी उजागर करता है।

### ऑटिस्म क्या होता है?

ऑटिज्म मस्तिष्क के विकास के दौरान होने वाला एक न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर है,जो व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार और संपर्क को प्रभावित करता है। यह सामान्य तौर पर बच्चे के तीन साल के होने से पहले ही शुरू होने लगता है। हर बच्चे में इसके लक्षण अलग हो सकते हैं। इससे प्रभावित बच्चा सीमित व्यहार कर सकता है या बार-बार एक ही काम को दोहराता है। ऑटिज्म से पीड़ित लगभग चालीस प्रतिशत बच्चे बोल भी नहीं पाते हैं।

### समय पर पहचान जरूरी, पूरी तरह से ठीक नहीं होता ऑटिज्म

जन्म के दो साल तक अगर बच्चे किसी तरह का इशारा नहीं करें तो वह ऑटिज्म का लक्षण हो सकता है। वैसी परिस्थिति में उसे चिकित्सक को दिखाना चाहिए,क्योंकि सही समय पर बीमारी की पहचान हो जाए तो उसे काफी हद कर ठीक किया जा सकता है। ऑटिज्म की पहचान सही समय पर होने से उसे सही ट्रीटमेंट देकर रोगी का जिंदगी को बेहतर किया जा सकता है। ऑटिज्म रोगी को बिहेवियर थेरेपी सहित अन्य तरह के थेरेपी देकर इलाज किया जाता है।

### क्या होते हैं ऑटिज्म के लक्षण

- जन्म के दो साल तक बच्चों को नहीं बोलना।
- भाषा के विकास में विलंब होना।
- लैंग्वेज स्किल्स की कमी।
- बिहेवियरल स्किल्स की कमी।
- समूह में खेलना पसंद नहीं करना।
- सोशल स्किल्स की कमी
- मानसिक अवसाद।
- गले मिलने से अस्वीकार करना।
- नाम बुलाने पर उत्तर नहीं देना।
- एक चीज को बार-बार दोहराना।

# डायबिटीज की जटिलताएं

हमारी कोशिकाओं की शर्करा का स्तर लंबे समय तक कम और हमारे रक्त की शर्करा का स्तर लंबे समय तक बढ़ा रहता है तो यह हमारे शरीर के अनेक अंगों और ऊतकों को गंभीर रूप से क्षति पहुंचा सकता है। शरीर के अंगों का इस प्रकार से खराब होना डायबिटीज की जटिलताएं कहलाता है। इनमें से कुछ जीवन के लिए खतरा भी होती हैं। कुछ जटिलताएं हैं हृदय और रक्त परिसंचरण से संबंधित- कोरोनरी आर्टरी की बीमारियां, हृदयाघात, उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल और खून की नलियों में कोलेस्ट्रॉल का जमा हो जाना। लंबे समय तक बढ़ा हुआ शर्करा का स्तर हमारे रक्त में अच्छे कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम कर सकता है और बुरे कोलेस्ट्रॉल्स (लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन और ट्राइग्लिसराइड्स) का स्तर बढ़ा सकता है।

डॉ.राजीव अग्रवाल
तिलहर, शाहजहांपुर

**तंत्रिका तंत्र को हानि-** हाथों और पैरों की उंगलियों का सुन्न पड़ जाना,उनमें झनझनाहट होना और उनमें कमजोरी महसूस होना।

**गुर्दों को नुकसान पहुंचना-** इस कारण गुर्दे खराब हो सकते हैं और हमें डायलिसिस अथवा गुर्दों के प्रत्यारोपण की आवश्यकता पड़ सकती है।

**आंखों को नुकसान पहुंचना-** लंबे समय तक रहने वाली डायबिटीज के कारण आंशिक अथवा पूर्ण अंधापन हो सकता है। इसके कारण हमें रेटिनल डिटैचमेंट, मोतियाबिंद और ग्लॉकोमा जैसी बीमारियां हो सकती हैं अथवा बढ़ सकती हैं।

**हाथों और पैरों का नष्ट हो जाना-** लंबे समय तक रहने वाली डायबिटीज से हमें हाथों अथवा पैरों में शुष्क अथवा गीली गैंग्रीन हो सकती है। इस कारण प्रभावित अंग में इंफैक्शन हो सकता है,उसमें खून का प्रवाह रुक सकता है,उसकी तंत्रिकाओं को हानि पहुंच सकती है और संपूर्ण अंग नष्ट हो सकता है।

त्वचा के संक्रमण, नपुंसकता, सुनने की क्षमता का कम हो जाना, अवसाद, स्मरण-शक्ति का कम हो जाना, शक्कर का कम हो जाना, मरीज का बेहोश हो जाना, दिमाग को नुकसान पहुंच जाना। ऐसा गलती से शक्कर की दवाओं के अधिक मात्रा में शरीर में पहुंच जाने से हो सकता है।

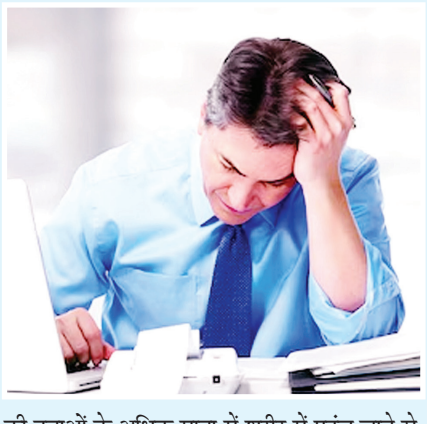

**कीटोएसीडोसिस-** कोशिकाओं में शर्करा का स्तर कम होने के कारण वह वसाओं को तोड़कर उनसे ऊर्जा प्राप्त करती है और इस क्रिया में कीटोन बॉडीज पैदा होती है,जो अनेक प्रकार से शरीर के लिए हानिकारक होती है। जख्मों का पक जाना और उनका जल्दी सही न होना।

### गर्भावस्था डायबिटीज की जटिलताएं

गर्भावस्था में होने वाली ये जटिलताएं मां और बच्चे दोनों में हो सकती है।

### मां में होने वाली जटिलताएं

प्रीएक्लैम्प्सिया- गर्भावस्था में होने वाले उच्च रक्तचाप, मूत्र में प्रोटीन का आना, पैरों और टांगों में सूजन आना जैसे लक्षणों को प्रीएक्लेम्प्सिया बोलते हैं। डायबिटीज में इसकी संभावना बढ़ जाती है।

इसके अतिरिक्त भविष्य में होने वाले गर्भ के लिए खतरों का बढ़ जाना और जीवन में डायबिटीज़ होने की संभावना का बढ़ जाना जैसी जटिलताएं गर्भावस्था के दौरान होने वाली डायबिटीज में हो सकती हैं।

### नवजात शिशु की जटिलताएं

सामान्य से अधिक जन्मभार का होना, उच्च अथवा निम्न रक्त शर्करा का होना, जीवन में बाद में टाइप 2 डायबिटीज होने का खतरा बढ़ जाना। यदि नवजात शिशु का वजन 9 पौंड (4 किलाग्राम) से अधिक हो तो हमें उसे डायबिटीज होने का शक होना चाहिए और हमें इसकी जांच करनी चाहिए।

### जांचें और निदान

आम जनता को ये चिकित्सकीय बातें उबाऊ लग सकती हैं,लेकिन रोग को समझने में इनका अपना महत्व है और मुझे विश्वास है कि जब मैं इस रोग के परहेज, बचाव और उपचार पर आऊंगा तो वह भाग लोगों के लिए रुचिकर होगा।

# डेढ़ बीघा जमीन

फिल्म "डेढ़ बीघा जमीन"। इसके नाम से बलराज साहनी की "दो बीघा जमीन" याद आ गई। बस वो भी रहने दीजिए, वो तो यादों में रहेगी ताउम्र। फिलहाल "डेढ़ बीघा जमीन" की बात करें।

एक छोटे शहर का आढ़तिया है अनिल कुमार जिसका रोल कर रहे हैं प्रतीक गांधी। वह अपनी बहन का रिश्ता करते हैं जिसमे भारी भरकम दहेज तय होता है। हैसियत न होने पर भी भाई अपने स्वर्गवासी पिता जी की खरीदी हुई जमीन की कीमत के भरोसे उसके लिए हां कह देता है। फिर जब वह उस जमीन को बेचने का प्रयास करता है तो उस जमीन पर इलाके के विधायक का कब्जा बताया जाता है। जमीन बेचने के चक्कर में वह विधायक से भी मिलता है,पर मामला सुलझता नहीं, उलझता ही जाता है। यही कहानी है,जो अंतत: अप्रत्याशित हो जाती है।

ब्रज राज नारायण सक्सेना
सेवानिवृत्त, सहायक महाप्रबंधक भारतीय रिजर्व बैंक

निर्देशक पुलकित ने निम्न मध्यम वर्ग की आर्थिक और सामाजिक मजबूरियों को दर्शाती अच्छी कहानी चुनी है। प्रतीक गांधी ने एक परिवार का मुखिया और कुंआरी बहन के भाई की भूमिका अच्छी तरह निभाई है। भाभी की भूमिका में कुशाली कुमार ने भी अच्छा काम किया है। छोटे शहर के लोगों की सीधी सादी जिंदगी और व्यवस्था के प्रति उनका अनाड़ीपन बहुत पारदर्शी तरीके से दिखाया गया है। यह सामान्य और स्वीकार्य ही है कि ईमानदार व्यक्ति बहुत सहता है,परंतु उसका धैर्य भी एक दिन खत्म होता ही है।

वह बगावत करता है,पर क्या वह फिर भी व्यवस्था से लड़ पता है? क्या वह विजयी होता है? काश कि फिल्म में कहीं यह लिखा होता कि 'यह सच्ची घटना है या उस पर आधारित है' तो इसे स्वीकारना आसान हो जाता। कथा लेखन के मानदंडों पर कथानक सही नहीं है। सच और कहानी में यही तो अंतर है। कहानी कहने की एक दम सच्ची और सीधी कला, ईमानदार अभिनय और वास्तविक परिवेश के लिए "डेढ़ बीघा जमीन " को देखा जा सकता है। परंतु आईएमडीबी रेटिंग 7 मुझे कुछ अधिक लगी है।

## साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

**मेष**

यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ रहने वाला है। यदि आप बेरोजगार हैं तो आपको सप्ताह के पूर्वार्ध में ही आपको रोजी रोजगार से संबंधित कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। इस दौरान आपको आपकी मेहनत और किए गए प्रयास का पूरा फल मिलेगा। धनागम के योग बनेंगे।

**वृष**

इस सप्ताह अपनी ऊर्जा और समय का प्रबंधन करके चलते हैं तो उन्हें मनचाही सफलता मिल सकती है। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आपको अपने कार्यक्षेत्र में सभी को मिलाजुलाकर चलना उचित रहेगा। आपको अपने काम और संबंध को दोबारा से बेहतर बनाने के पूरे मौके मिलेंगे।

**मिथुन**

इस सप्ताह अपनी सेहत, सामान और संबंध तीनों का खूब ख्याल रखने की आवश्यकता रहेगी। साथ ही साथ अपनी दिनचर्या और खानपान का भी खूब ख्याल रखना होगा अन्यथा पेट से संबंधित दिक्कतें हो सकती हैं। इस सप्ताह आपको मौसमी बीमारी के प्रति भी सचेत रहने की जरूरत बनी रहेगी।

**कर्क**

यह सप्ताह थोड़ा उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस हफ्ते अपने किसी भी कार्य को जल्दबाजी या असमंजस में करने से बचना चाहिए अन्यथा बड़ी आर्थिक हानि होने की आशंका है। इस दौरान आपको परिजनों से अपेक्षाकृत सहयोग और समर्थन नहीं मिल पाएगा जिसके चलते आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा।

**सिंह**

यह सप्ताह शुभता लिए हुए है। आपको किसी बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार की प्राप्ति हो सकती है। इस दौरान आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होते हुए नजर आएंगे जिसके कारण आपके भीतर एक अलग ही उर्जा और आत्मविश्वास नजर आएगा। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आप इस पूरे सप्ताह अपने कारोबार में लाभ प्राप्त करेंगे।

**कन्या**

यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। आपको संतान से जुड़ी कोई बड़ी चिंता हो सकती है। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आपको इस सप्ताह अपने छोटे से छोटे कार्य को पूरा करने के लिए ज्यादा परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है। कार्यक्षेत्र में आपको प्रयास करने के बाद सफलता मिलेगी ।

**तुला**

इस सप्ताह बात से बात बनेगी और बात से ही बात बिगड़ेगी। ऐसे में आपको लोगों के साथ बातचीत या कोई बड़ी डील करते हुए विनम्रता से बात-व्यवहार करना फायदेमंद साबित होगा तो वहीं इस सलाह की अनदेखी करने पर आपको बड़ा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ सकता है।

**वृश्चिक**

यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ रहने वाला है। आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनचाही सफलता मिलती हुई नजर आएगी। आपको घर और बाहर दोनों जगह लोगों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। नौकरीपेशा व्यक्ति को कार्यक्षेत्र में उनकी विशेष उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया जा सकता है।

**धनु**

इस सप्ताह कामकाज के सिलसिले में जरा ज्यादा ही भागदौड़ करनी पड़ सकती है। आपकी लंबी अथवा छोटी दूरी की कई यात्राएं हो सकती हैं। करियर, कारोबार और संबंधों की दृष्टि से ये यात्राएं अत्यंत ही शुभ साबित होंगी। आपकी किसी प्रभावी व्यक्ति से मुलाकात होगी जिसके जरिए आपको भविष्य में लाभ की योजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा।

**मकर**

यह सप्ताह सकारात्मक और मनचाह फल प्रदान करने वाला रहेगा। करियर-कारोबार के सिलसिले में आपको लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा सुखद एवं नए संबंधों को बढ़ाने वाली साबित होगी। नौकरीपेशा लोगों को इस पूरे सप्ताह कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी।

**कुंभ**

यह सप्ताह थोड़ा उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। कार्यों में आने वाली कुछेक अड़चनों के कारण आप थोड़े हताश और निराश हो सकते हैं, लेकिन यह स्थिति लंबे समय तक नहीं रहेगी और आप सप्ताह के उत्तरार्ध तक आप अपने इष्टमित्रों और शुभचिंतकों की मदद से कठिन से कठिन से परिस्थिति से उबरने में कामयाब हो जाएंगे।

**मीन**

यह सप्ताह शुभता लिए है। इस सप्ताह आप पाएंगे कि आपके सोचे हुए काम समय पर पूरे हो रहे हैं। खास बात कि किसी भी ख्वाहिश को पूरा करने में आपके सगे-संगी अपना पूरा समर्थन और सहयोग देते हुए नजर आएंगे। सुख-सुविधा से जुड़ी किसी प्रिय चीज की प्राप्ति से आपका मन बेहद खुश रहेगा।

## वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

### काकुरो 87

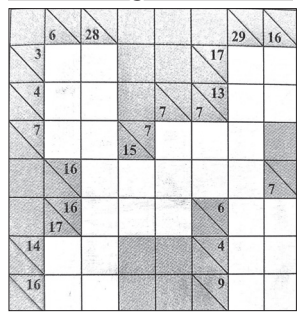

### काकुरो 86 का हल

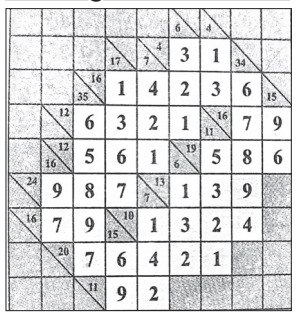

# श्रेणियों में संगठित थे भारतीय व्यापारी

छठी सदी के दक्षिण भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ के भी काफी जोर-शोर से व्यापार आरंभ हो गया था। इस काल के साहित्य से पता चलता है कि उस क्षेत्र के देशों के संबंध में दक्षिण भारत के लोगों की जानकारी बढ़ती जा रही थी। उस काल की कई रचनाओं में जैसे हरिषेण के वृहत कथा कोष में क्षेत्र की भाषाओं वेश-भूषा आदि की खास विशेषताओं का जिक्र मिलता है। उस क्षेत्र के जादुई समुद्र में भारतीय व्यापारियों से संबंधित अनेक कथाएं प्रचलित हुईं।

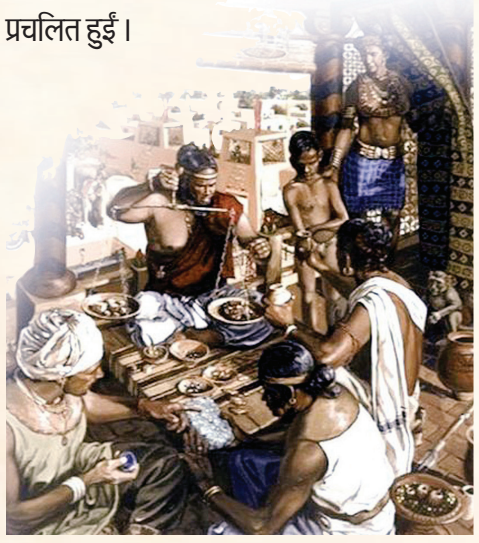

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

यही कथाएं नाविक सिंदबाद से जुड़ी कहानियों का आधार बनीं। भारतीय व्यापारी श्रेणियों में संगठित थे। इनमें सबसे विख्यात श्रेणी ग्रामीण और नाना देसी की शिवन्या की थी,जो प्रारंभिक काल से ही सक्रिय थी। बहुत से भारतीय व्यापारी दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में बस गए और कुछ ने तो स्थानीय लोगों की बेटियों से विवाह भी कर लिया। व्यापारियों के पीछे-पीछे पुरोहित लोग भी उन देशों में पहुंचे और इस प्रकार उन क्षेत्रों में बौद्ध एवं हिंदू धार्मिक विचारों का समावेश हुआ। जावा में बोरोबुदुर का बौद्ध मंदिर और कंबोडिया में अंकोरवाट नामक ब्राह्मणी मंदिर उस क्षेत्र में इन दोनों धर्मों के प्रचार प्रसार के प्रमाण हैं। क्षेत्र में उस क्षेत्र के कुछ राष्ट्र परिवार तो हिंदू ही बन गए थे। उन्होंने भारत के साथ व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का स्वागत किया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति ने स्थानीय संस्कृति से मिश्रित होकर नई सांस्कृतिक तथा साहित्य रूप विधाओं को जन्म दिया।

कुछ शिक्षकों/अध्येताओं का विचार है कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की भौतिक प्रगति सभ्यता के विकास और बड़े राज्यों के उदय का आधार वहां चावल की सिंचित खेती की भारतीय विधि का प्रचार था। बहरहाल आंतरिक व्यापार का ह्रास होने के साथ ही व्यवसाय में लगे लोगों के संगठन जिन्हें श्रेणी या संघ कहा जाता था 64 हो गए। इन श्रेणियों या संघों में बहुधा अलग-अलग जातियों के लोग शामिल थे। उनके आचार के अपने नियम होते थे जिनका पालन करना उनके सदस्यों का कानूनी फ्रअझ होता था। उन्हें ऋण लेने और देने तथा अनुदान प्राप्त करने का हक होता था। व्यापार वाणिज्य के ह्रास के साथ ही इन संस्थाओं ने अपना विगत महत्व खो दिया। इस काल से श्रेणियों के अनुदान पाने के बहुत कम उल्लेख देखने को मिलते हैं।

कालांतर में कुछ पुरानी श्रेणियां उप-जातियों के रूप में उभरीं। उदाहरण के लिए द्वादश श्रेणी वैश्यों की एक उपजाति बन गई। जैन धर्म को व्यापारियों का संरक्षण प्राप्त था। व्यापार में गिरावट आने से जैन धर्म की भी क्षति हुई। इस काल के चिंतन से भी व्यापार-वाणिज्य के ह्रास की झलक मिलती है। इस काल में रचित कुछ धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि जहां मूंज उगती है और जहां काला चिंकारा विचरण करता है उस क्षेत्र से बाहर अर्थात् भारत के बाहर यात्रा नहीं करनी चाहिए। धर्मशास्त्रों ने यात्रा करने पर निषेध लगा दिया। यह भी माना जाता था कि खारे जल वाले समुद्र में यात्रा करने से व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है।

वैसे यह सच है कि हर व्यक्ति इन निषेधों का आदर नहीं करता था। ऐसे विवरण उपलब्ध हैं जिससे पता चलता है कि इस काल में भारतीय व्यापारी, दार्शनिक, चिकित्सक और शिल्पी बगदाद और पश्चिमी एशिया के अन्य मुस्लिम शहरों में पहुंचे। शायद यह निषेध सिर्फ ब्राह्मणों के लिए था या फिर इसका उद्देश्य भारतीयों को बहुत बड़ी संख्या में पश्चिम में इस्लाम प्रधान क्षेत्रों में और पूरब में बौद्ध धर्म प्रधान क्षेत्रों में जाने से रोकना था,क्योंकि धर्म शास्त्रकारों को भय था कि कहीं ऐसा न हो कि ये लोग वहां से ऐसे असनातन धार्मिक विचार लेकर लौटें जो ब्राह्मणों तथा शासक समूह को परेशानी में डालने वाला हो।

## इतिहास के झरोखे से

# पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

## मुनि आरुणि एवं श्वेतकेतु द्वारा सम्राट जयवलि से शिक्षा ग्रहण

अरुणि मुनि के पुत्र श्वेतकेतु एक समय अभिमान सहित पंचाल देश के विद्वानों से शास्त्रार्थ करने गए। उन्हें विश्वास था कि उनके पिता ने उन्हें संपूर्ण ब्रह्मज्ञान सिखा दिया था। वे काम्पिल्य पहुंचे और वहां उन्होंने सम्राट जयबलि से शास्त्रार्थ करने का प्रस्ताव रखा। सम्राट जयबलि ने श्वेतकेतु से पांच प्रश्न पूछे, परंतु एक का भी उचित उत्तर न दे सके। लज्जित होकर श्वेतकेतु वापस आए और उन्होंने अपने पिता से उन्हीं प्रश्नों के उत्तर पूछे। पिता केवल प्रश्नों को सुनकर ही चकित रह गए और उनसे भी उत्तर देते नहीं बना। वे अपने पुत्र को लेकर जयबलि के पास आध्यात्मवाद सीखने आए। सम्राट ने सम्मान सहित उन्हें अपना शिष्य स्वीकार किया और आध्यात्मवाद की शिक्षा देने लगे। उक्त गाथा से प्रतीत होता है कि प्राचीन भारत में शिक्षा और अध्ययन के लिए लोगों में कितनी रुचि थी। ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा कभी तृप्त नहीं होती थी और वयोवृद्ध जन भी शिक्षा से इतनी लगन रखते थे कि अपने से छोटी वयस् के परंतु विद्वान व्यक्ति का शिष्य बनने को तत्पर रहते थे।

**विश्वविद्यालय में औषधि विज्ञान-** विश्वविद्यालय में औषधि विज्ञान की शिक्षा का समुचित प्रबंध था। आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ आत्रेय संहिता के अधिकांश भाग को जिसमें शल्य क्रिया भी है। इस विश्वविद्यालय के औषधि विज्ञान विभाग के प्रधान आचार्य आत्रेय ने अग्निवेश आदि शिष्यों को उपदेश के रूप में दिया था। आत्रेय के इस ग्रंथ से प्रतीत होता है कि यूनान और वाल्हीक तक के कांकायन आदि प्रसिद्ध विज्ञान वेत्ता इस विश्वविद्यालय के आचार्य के निर्देशन में शोध कार्य करने आया करते थे।

**विश्वविद्यालय में प्रयोगशालाएं-** विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग के अंतर्गत एक विशाल प्रयोगशाला भी थी। इस प्रयोगशाला में वानस्पतिक, खनिज एवं प्राणिज औषधि-द्रव्यों के रासायनिक परीक्षण होते थे। प्रकाश, अंधकार, सूर्य, चन्द्र, शीत उष्ण आदि प्राकृतिक परिवर्तनों से औषधियों और द्रव्यों में उत्पन्न परिवर्तनों को जानने के लिए बड़े-बड़े यंत्र थे। औषधि शास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सब रासायनिक प्रयोग करने पड़ते थे। इस विभाग के प्रधान आचार्य आत्रेय पुनर्वसु थे।

**औषधि विभाग के आचार्य आत्रेय-** विश्वविद्यालय के औषधि विभाग के आचार्य अपने विषय में इतने पारंगत थे कि किसी भी संक्रामक अथवा सामूहिक रोग के होने की संभावनाओं से रोग फैलने के पहले ही जान जाते थे। एक समय काम्पिल्य में महामारी फैली। महामारी फैलने के पहले आत्रेय ने अपने शिष्यों से कहा कि ग्रह नक्षत्रों का विषम योग सिद्ध करता है कि विध वंसकारी महामारी फैलने वाली है। अतः तुम लोग जाकर अपनी प्रयोगशाला में वनौषधियों को भर लो नहीं तो महामारी फैल जाने से वनौषधियों पर भी बड़ा विषम प्रभाव पड़ेगा। उनमें कोई स्वाथ्यकारी गुण नहीं रह जाएगा। शिष्यों ने गंगा की तराई से औषधियों को उखाड़कर प्रयोगशाला भर दी। अपनी शिक्षा पद्धति और शिक्षोपयोगी साहित्य के कारण काम्पिल्य संपर्ण देश में प्रसिद्ध था। पंचाल देश की शिक्षा का केन्द्र भी था। साहित्यिक कलाओं के साथ-साथ भी यहां विज्ञान की शिक्षा का समुचित प्रबंध किया गया था।

**काम्पिल्य में जैन मंदिर-** वर्तमान कम्पिल में गुप्त तथा मध्यकालीन अनेक अवशेष प्राप्त हुए हैं,जिन्हें देखने से पता चलता है कि ईसवी चौथी से लेकर दसवीं ग्यारहवीं शती तक यहां अनेक हिन्दू जैन मंदिर थे। यह स्थान जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। यहीं तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान ये चार कल्याणक हुए थे। भगवान महावीर ने भी इस नगर में उपदेश दिए थे। वर्तमान जैन मंदिर में विमलनाथ की जी की भव्य प्रतिमा है। इसके अतिरिक्त अनेक प्राचीन मूर्तियां भी यहां सुरक्षित हैं जिनमें सर्वतोभद्रिका प्रतिमाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। अब भी कम्पिल जैनियों का एक प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र है।

**काम्पिल्य के हिन्दू मंदिर-** कम्पिल में अनेक प्राचीन हिन्दू मन्दिर इस समय भी विद्यमान हैं। इनमे रामेश्वरनाथ महादेव का मन्दिर विशेष प्रसिद्ध है। जनश्रुति है कि लंका से लौटकर आने के बाद श्रीराम ने यहां मूर्ति का प्रतिष्ठापन अपने हाथों किया। इस मंदिर को सिद्धपीठ भी कहा जाता है। कम्पिल के अन्य दर्शनीय स्थानों में कम्पलिकुटी, कालेश्वर तथा कम्पिलवासिनी देवी का मन्दिर, विश्रान्तिघाट और भैरोंगिरि का स्थान है। इन स्थानों में अनेक कलापूर्ण अवशेष देखे जा सकते हैं। गजलक्ष्मी की एक अत्यंत सुंदर गुप्त कालीन मूर्ति कम्पिल की एक दीवार पर लगी है। गुप्त कालीन अनेक उत्कीर्ण शिलापट्ट तथा स्तंभ भी यत्र तत्र देखे जा सकते हैं।

# प्राचीन इष्टिका मंदिर भीतरगांव

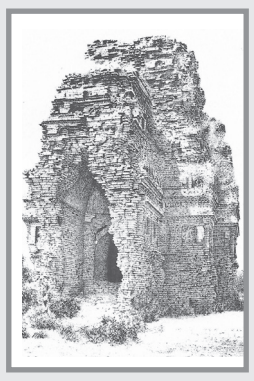

कानपुर की तहसील घाटमपुर विकास खंड भीतर गांव में गुप्त कालीन ईटों से निर्मित शिखर शैली का एक विशाल मंदिर मौजूद है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संस्थापक एलेक्जेंडर कनिंघम ने 1877 में यहां का दौरा अपने मित्र राजा शिव प्रसाद के कहने पर किया और उसके पश्चात फरवरी 1878 में उन्होंने इस मंदिर का भलीभांति सर्वेक्षण किया।

कनिंघम ने अपने सर्वेक्षण में लिखा कि उत्तरी भारत के मैदानी भागों में पत्थरों की उपलब्धता न होने के कारण मिट्टी की पकी ईटों से अनेकों स्मारकों का निर्माण किया गया,जिन्हें नक्काशीदार सांचे में ढली हुई ईटों के द्वारा अलंकृत किया गया। भीतर गांव का पुराना नाम कुसुमपुर अथवा फूलपुर था। भीतर गांव मंदिर की भव्यता देखकर कलिंघम आश्चर्य के साथ लिखते हैं कि मुस्लिम आक्रांताओं के प्रकोप से संभवतः यह मंदिर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण बच गया,जो भारत के मंदिर निर्माण के आयामों को दिग्दर्शित करता है। इस संदर्भ में इतिहासकार वोगेल ने भी 1909 ने अपनी रिपोर्ट भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण के वार्षिक प्रकाशन में प्रकाशित करवाई और उन्होंने भी लिखा कि मिट्टी की पकी हुई ईटों का बचा हुआ प्राचीनतम मंदिर है,जो पूर्व गुप्त काल का निर्मित प्रतीत होता है। भीतरगांव का मंदिर 66 फुट के वर्ग में बना हुआ है। इसकी ऊंचाई 68 फुट है तथा इसे पिरामिड आकार में बनाया गया है जिसकी दीवारें आठ फुट मोटी हैं। इसके निर्माण में 18x9x3 ईंच की ईटों का इस्तेमाल किया गया है और इसके बाह्य स्वरूप को मिट्टी के पके हुए मूर्तियों के पैनल से तथा अलंकृत ईटों से सजाया गया है। मंदिर के गर्भगृह में कोई भी विग्रह नहीं है। परंतु इसके पैनलों में वराह (विष्णु का अवतार) दुर्गा, गणेश तथा विष्णु के अन्य अवतारों की लीलाएं अंकित हैं। इसमें गंगा और यमुना का भी अलंकरण किया गया है। पैनलों में मूर्तियों की शारीरिक संरचना आनुपातिक रूप से लालित्यपूर्ण एवं सौम्य है। ईटों की कलाकृतियों के ऊपर महीन प्लास्टर भी किया गया है,जो समय की मार से धीरे-धीरे क्षीण हो रहा है। पुराने मंदिरों से मिलान करते हुए पैनलों की मूर्तियों से यह अनुमान लगाया जाता है कि यह एक वैष्णव मंदिर था। मंदिर के पैनलों में एक मूर्ति बुद्ध की प्रतिमा का भी आभास दिलाती है। कनिंघम के अनुसार इस मंदिर की सबसे विशेष बात यह है कि इसमें भारतीय महराब का प्रयोग किया गया है। इस उल्लेख से यह मिथक समाप्त होता है कि भारत में महराब का प्रयोग मुगलों के आने के बाद किया गया। अर्धगोलाकार महराब में ईटें किनारे से किनारा जोड़कर महराब बनाई गई है जबकि पाश्चात शैली में ईटें आपने-सामने जोड़ी जाती है। मंदिर की यह विशेषता तत्कालीन उन्नतिशील निर्माणशैली को दर्शाता है। मंदिर में नक्काशीदार कोरनिशों का भरपूर उपयोग किया गया है जिसमें फूल, पत्ती, पशु-पक्षियों का अत्यंत सुंदर रूप से अलंकरण किया गया है।

धर्म प्रकाश गुप्त
इतिहास विश्लेषक, कानपुर

मंदिर के भित्तचित्रों में पुरुष, महिला युग्म की मूर्तियां भी बनी हुई हैं। मंदिर में प्रवेश लगभग छह सीढ़ियां चढ़ने के उपरांत होता है। आगे का पोर्च क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण सीढ़ियां चढ़ने के बाद अर्धगोलाकार बरामदा मिलता है और उसके पश्चात् गर्भ गृह मिलता है। गर्भगृह बिल्कुल चौकोर एवं अलंकरण रहित है और उसमें किसी भी देवी-देवता की मूर्ति नहीं है,परंतु जैसा कि पूर्व में इंगित किया गया है कि यह संभवतः विष्णु मंदिर था। गर्भगृह में कोई मूर्ति न होने के कारण स्थानीय लोग इसे भूतों द्वारा निर्मित मंदिर मानते थे। मंदिर किसने बनवाया इसके बारे में कोई भी तथ्य उपलब्ध नहीं है। वर्ष 1884-85 में ए.सी. पोलवेल जो उस समय सुपरिटेंडिंग इंजीनियर थे,की देख-रेख में इसमें मरम्मत का कार्य हुआ। तत्पश्चात् लौग हसर्ट की देख-रेख में इसका जीर्णोद्धार एवं मरम्मत करवाई गई। मंदिर का शिखर बीच में पोला तथा द्विस्तरीय है जिसे तकनीकी भाषा में डबलडोम कहा जाता है। विश्व के इस प्राचीनतम मंदिर के महत्व को देखते हुए 24 मार्च 2022 को कानपुर पंचायत द्वारा आयोजित कानपुर दिवस में इसे विश्व धरोहर घोषित करने का प्रस्ताव भारत सरकार को भेजा गया जिसके परिप्रेक्ष्य में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण लखनऊ मंडल द्वारा अपनी संस्तुति में इसे मानव रचनात्मक प्रतिभा की अमूल्य कृति बताया गया है। इस गुप्त कालीन मंदिर को अपने काल का रत्न मानते हुए कहा गया कि यह उत्तर भारत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय स्मारक है।

# लक्ष्मी नारायण मंदिर, कल्पवृक्ष और बेतवा नदी

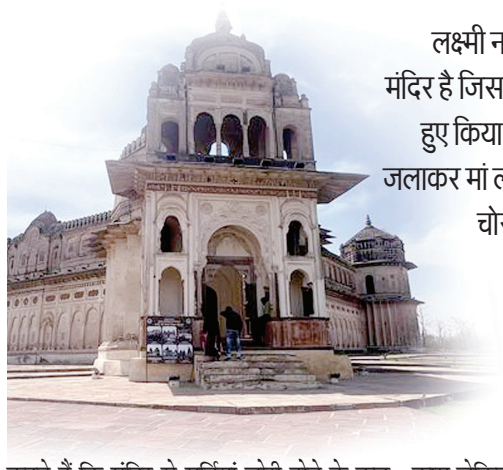

लक्ष्मी नारायण मंदिर 1622 ई. में वीर सिंह देव ने बनवाया था। पूरे देश में यह इकलौता मंदिर है जिसका निर्माण तत्कालीन विद्वानों द्वारा श्रीयंत्र के आकार में उल्लू की चोंच को दर्शाते हुए किया गया है। इस मंदिर की मान्यता है कि दीपावली के दिन इस सिद्ध मंदिर में दीपक जलाकर मां लक्ष्मी की पूजा करने से वह प्रसन्न होती हैं। 1983 में मंदिर में स्थापित मूर्तियों को चोरों ने चुरा लिया था। तब से आज तक मंदिर के गर्भगृह का सिंहासन सूना पड़ा है।

कहते हैं कि मंदिर से मूर्तियां चोरी होने के कुछ समय बाद ही लक्ष्मी नारायण की प्रतिमाएं बरामद कर ली थी,लेकिन मूर्तियां खंडित होने के चलते दोबारा स्थापित नहीं हो सकीं। इस मंदिर में सत्रहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के चित्र बने हुए हैं। चित्रों के चटकीले रंग इतने जीवंत लगते हैं कि जैसे वह हाल ही में बने हों। मंदिर में झांसी की लड़ाई के दृश्य और भगवान कृष्ण की आकृतियां बनी हैं।

लक्ष्मी नारायण मंदिर देखने के बाद कल्पवृक्ष देखने गए। शहर के बाहर स्थित यह पेड़ लगभग पांच सौ साल पुराना बताया जाता है। कहते हैं कि इसके नीचे खड़े होकर जो मुराद मानो पूरी होती है। इसे मनोकामना पेड़ भी कहा जाता है। पेड़ दो हिस्सों में है। लगभग एकरूप हैं दोनों हिस्से। एक का कोई भी हिस्सा हिलाओ तो दूसरा हिस्सा भी हिलता है। पवन ने हिलाकर भी दिखाया।

हमने पूछा पवन से कि तुमने भी कोई मनोकामना की होगी इस पेड़ के नीचे। पवन बोले -'की थी लेकिन अभी पूरी नहीं हुई है।' हमने पूछा क्या थी मनोकामना? तो बोले -'बताई थोड़ी जाती है मनोकामना। बताने से पूरी नहीं होती।'

इस बीच पवन ने अपने बारे में बताया कि वे गुजरात में एक जगह खाना बनाने का काम करते थे। कोरोना काल में सब ठप्प हो गया। घर वापस आना पड़ा। यहां भी शुरू में कोई काम नहीं था। फिर ऑटो चलाना शुरू किया। दिन में लोकल के दो टूर तक मिल जाते हैं। उसी से काम चलता है। कभी-कभी नहीं भी मिलता है काम,लेकिन ठीक है।

मनोकामना वृक्ष देखने के बाद अपन बेतवा तट की तरफ बढ़े। बेतवा नदी के पास ही छतरियां बनी हुईं थीं। पवन हमको बेतवा किनारे छोड़कर चले गए। बेतवा नदी में लोग नहा रहे थे। अपन का भी मन हुआ नहाने का। पानी में उतरकर खड़े हो गए। गाड़ी से अटैची मंगवाई, उसमें कपड़े थे,लेकिन तौलिया नहीं थी। सोचा कि नहाने के बाद कपड़े कैसे बदलेंगे? तमाम तरकीबें सोचते रहे,लेकिन कोई उपाय नहीं सूझा। यह भी सोचा कि कहीं आड़ में खड़े होकर बदल लेंगे कपड़े,गाड़ी में बदल लेंगे, लेकिन संकोच ने हमलाकर दिया। हम संकोच घायल हो गए। पानी के अंदर उतरकर नहाए नहीं। लोगों को मस्ती से नहाते देखते रहे।

नहाए भले नहीं,लेकिन काफी देर तक बेतवा के पानी में घुटने तक भीगे खड़े रहे। पानी में तमाम लोग नहा रहे हैं। पानी में कई टूटी हुई चूड़ियां और इसी तरह के श्रृंगार के सामान दिख रहे थे। लोग वहां नहा रहे थे, मोटर वोट में लोग बेतवा दर्शन कर रहे थे। अपन पानी में खड़े-खड़े सबको देखते हुए आनंदित होते रहे। बेतवा नदी से निकलकर बाहर आए और वहां पास ही बनी छतरियां देखीं।

ओरछा के राजाओं के स्मारक उनके वैभव की कहानी कहते हैं। शानदार इमारतों में कोई रहता नहीं,लेकिन इसी बहाने राजाओं की कहानी किस्से चलते रहते हैं। लौटते समय गाड़ी में बैठे तो देखा कि सीट पर तौलिया लगी थी। आगे भी तौलिया। जिस तौलिया के न होने के कारण बेतवा नहान से वंचित रह गए वे तो अनेक थीं गाड़ी में,लेकिन अपन केवल अपनी अटैची ही देखते रह गए। ऐसी ही संकुचित खोज के कारण जीवन में अनगिनत चीजों से अपन वंचित रह जाते हैं,लेकिन बेतवा अभी कहीं गई नहीं है। फिर जाएंगे और जी भरकर नहाएंगे बेतवा में।



लौटते समय रास्ते में एक जगह चाय पी। वहां एक मोटर साइकिल वाले ने बताया कि उसका लाइसेंस नहीं है। इस चक्कर में पुलिस वालों को पिछले सालों में वह दसियों हजार घूस/नजराने के रूप में दे चुका है। पुलिस वाले कभी कोल्डड्रिंक मंगा लेते हैं, कभी पानी की बोतल, कभी कोई और सामान। हमने पूछा तो लाइसेंस बनवा काहे नहीं लेते? पता चला कि उसका घर गोरखपुर में हैं। पता वहां का है। जब जाएगा तब बनवाएगा।

हमको लगा कि बताओ भला एक लाइसेंस न होने के चलते कोई हजारों रुपये हलाक करा सकता है,लेकिन हमारे सोचने से क्या होता है? दुनिया में न जाने कितने काम होते हैं जिनके बारे में अपन सोच भी नहीं सकते। सोचते भी नहीं,लेकिन वे धड़ल्ले से हुए चले जा रहे हैं। बिना हमसे पूछे। क्या कर सकते हैं अपन। कुछ भी तो नहीं।

# उत्सवधर्मी जहांगीर

जब हम बादशाह जहांगीर के संस्मरणों को पढ़ते हैं तो हर जगह यह समझ आता है कि उन्होंने हिन्दू त्योहारों को उस तरह बनाने की परंपरा जारी रखी थी जैसे बादशाह अकबर के समय में स्थापित थी। जहांगीर स्वयं इन त्योहारों में सक्रिय रूप से भाग लिया करते थे। तथ्य यह भी है कि जहांगीर ने ही राखी के पर्व को फिर से पूरे उत्साह से मनाने की कार्यवाही की थी जिसे मनाना बादशाह अकबर के समय में कतिपय दरबारियों से हुए तनावपूर्ण संबंधों के कारण स्थगित कर दिया गया था। बादशाह की देखा-देखी उनके मुस्लिम दरबारी भी इस त्योहार के उत्सव समारोहों में भाग लिया करते थे। दीपावली के पर्व के दौरान जुआ खेलने की परंपरा के अनुसार बादशाह जहांगीर स्वयं तीन रातों तक नियमित जुआ खेला करते थे। होली, शिवरात्रि तथा दशहरा अच्छी तरह से मनाए जाते थे। इसीलिए जहांगीर ने अपने आत्मचरित में इन त्योहारों की प्रकृति तथा उनको मनाए जाने के तरीकों का विवरण दिया है। जहांगीर द्वारा हिन्दू त्योहारों को दिए जाने वाले सम्मान को इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि जब शब-ए-बरात और राखी का पर्व उसके राज्याभिषेक की तिथि वाले दिन पड़ा तो जहांगीर ने इसी कारण से इस दिन को एक शुभ दिन घोषित कर दिया।

कश्मीर के एक चर्चित हिन्दू पर्व में भी बादशाह जहांगीर के उत्साहपूर्वक भाग लेने के विवरण मिलते हैं। जहांगीर ने ही हिंदुओं की परंपरा तुलादान को आरंभ किया था। जहांगीर ने अकबर की ईजाद की हुई 'झरोखा दर्शन' की परंपरा को जारी रखा जिसमें मूल रूप से हिन्दू परंपरा का पालन किया गया था। इस परंपरा में बादशाह अपनी प्रजा को दर्शन दिया करते थे। इस बादशाह ने न केवल अपने दरबार में हिन्दू ज्योतिषियों को बनाए रखा,बल्कि उनकी भविष्यवाणियों पर अच्छा-खासा ध्यान भी दिया। अपने संस्मरणों में बादशाह जहांगीर ने विभिन्न हिन्दू तरीकों और आचार-विचार की जानकारी होने का ज्ञान दिया है। वह इसमें जाति प्रथा का विस्तार से वर्णन करता है,यद्यपि ऐसा इसलिए संभव हो सका है कि वह 'आइन-ए-अकबरी' के विवरण से प्रभावित होकर ऐसा करता हो। चार जातियों का विवरण देने के बाद वह उल्लेख करता है कि हर जाति के लिए साल में एक दिन उनकी पूजा का दिन होता है। तत्पश्चात वह ब्राह्मणों के कर्तव्यों के विषय में विस्तार से बताता है और कहता है कि सावन के अंतिम माह में उनकी तैनाती प्रार्थनाओं को सुगम बनाने और धार्मिक यात्राओं को शुभ बनाए रखने के लिए की जाती थी। जहांगीर ने वर्ण आश्रम को भी विस्तार से समझाने का प्रयास किया है ताकि गैर-हिन्दू पाठक यह समझ सकें कि ब्राह्मण लोग आश्रम व्यवस्था के विभिन्न चक्रों के अंतर्गत अपने जीवन को किस तरह से जिया करते थे।

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

बादशाह जहांगीर हिन्दू विद्वानों और धार्मिक लोगों से चर्चाएं और बहस करने में आनंदित हुआ करता था तथा उनको अपने दरबार में आमंत्रित करने की अकबर के समय की व्यवस्था बादशाह ने जारी रखी हुई थी। वह जोगियों से मिलने में रुचि रखता था और पेशावर के पास जोगी संप्रदाय के महत्वपूर्ण केंद्र गोरखात्री जाया करता था। वह अहमदाबाद के कांकरिया में मिले एक संन्यासी की विद्वता से प्रभावित हुआ था। बादशाह जहांगीर मोती नाम के एक तांत्रिक के प्रति भी काफी आकर्षण रखता था। इन सबके अतिरिक्त जहांगीर का जिस व्यक्ति के प्रति गहरा आकर्षण था वह जदरूप गोसाईं था। बादशाह ने जदरूप के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक नेता को अपनी आत्मकथा में इतनी जगह अथवा इतना सम्मान नहीं दिया। उसकी इस धार्मिक नेता से सात बार मुलाकात हुई,जो बादशाह के सत्ता के 11 वर्ष से लेकर 14 वर्ष तक रही। जब भी जहांगीर की जदरूप से भेंट होती थी तो वह एक बादशाह के औपचारिक तौर तरीकों से बेपरवाह होकर उससे मिला करता था।

बादशाह जहांगीर सफाविद साम्राज्य के शासक से भेंट के दौरान।

जहांगीर की जदरूप से पहली मुलाकात उसके शासन के 11 वें वर्ष में उज्जैन में हुई थी। वह लिखता है कि आरंभ में बादशाह उसे आगरा आमंत्रित करना चाहता था, परंतु बाद में उन्होंने ऐसा करने से स्वयं को रोक लिया। क्योंकि लंबी यात्रा के कारण जदरूप की वृद्धावस्था और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता। ऐसे में बादशाह ने स्वयं इस धार्मिक नेता से मिलने का मन बनाया। जब वह जदरूप के रहने के स्थल के निकट पहुंचा तो वह अपने घोड़े से उतर गया और ढाई फर्लांग तक पैदल चलकर उनसे मिलने गया। जहांगीर ने जदरूप के जीवन तथा उसकी दिनचर्या के विषय में विस्तार से सूचनाएं दी हैं। वह जदरूप की वेदांतिक दार्शनिकता पर विद्वता से प्रभावित थे इसीलिए इस धार्मिक नेता के विषय में उन्होंने लिखा था, "अल्लाह ने उनको एक खास किस्म की कृपा बख्शी है। उसके पास विद्वता की एक प्राकृतिक किस्म की ऊंचाई और बुलंदी है जिसे उनको अल्लाह ने इस संसार में निरपेक्ष भाव से दिया है ताकि वह कोई अपेक्षा किए बिना इस संसार से अपनी पीठ फेरकर एकांत से एक किनारे बैठकर बिना किसी जरूरत के अपनी साधना कर सके। उन्होंने सांसारिक वस्तुओं के नाम पर एक आधे गज का सूती कपड़ा रखा हुआ है जैसा कि महिलाओं का चेहरा ढकने के लिए जरूरी होता है और एक मिट्टी का बर्तन है जिससे वह पानी पीते हैं तथा सर्दियों, गर्मियों अथवा बरसात के मौसम में वह नग्न रहकर जीवन बिताते हैं।"

ऐसा समझा जाता है कि जहांगीर का संत जदरूप के प्रति स्नेह और आकर्षण दो मुख्य कारणों से था। पहला कारण था कि वह जदरूप के सांसारिक सुखों को पूरी तरह से अल्लाह को समर्पित करने तथा वेदांतिक पंथवाद को पूरा समय देने से प्रभावित थे और दूसरा यह था कि यह संन्यासी अपने विषय में बिना किसी धारणा या स्वाग्रह से अपने जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। जहांगीर अपने विश्वासों में तार्किक रहने का प्रयास करते थे,ऐसा इस बात से स्पष्ट होता है कि उन्होंने हिंदुओं के इस विश्वास को मानने से इंकार कर दिया था कि ईश्वर दस विभिन्न तरीकों से सामने आया करते हैं।